सूं अनुभावक रूप जाकूं देखके कामोद्दीपन होय ताकूं वर्णन करें हैं --

२४ -- **सुन्दरः** -- सर्व अंश करके ही सुन्दर है तासूं विशेष नहीं कह्यो याही सूं ही श्री गोपीजन श्रीजी के सम्पूर्ण श्री अंगों में शास्त्रोक्त चेष्टा करें हैं ताही सूं सर्व की आशक्ति यामें होय है और सर्व अंगों में ही आसक्ति होय है तथापि पुरुष की सौंदर्यता स्त्रीन के ही उपयोगी होय है तासूं विशेष सूं ब्रज भक्तन की ही आशक्ति आपमें है यह तात्पर्य है । ऐसे सौन्दर्य को जब कथन कह्यो सो सौन्दर्य ही प्रथम भई जे आसक्ति तिनको कारण है तासूं वा सौन्दर्य सूं प्रथम भई जो आसक्ति श्रीजी में तिनकूं स्मरणक भयो तहां प्रथम सुन्दरता सूं श्रीजी में आसक्ति श्री स्वामिनीजी की भई, ताके पीछे विरह सूं अत्यन्त आतुरता के होने पर साक्षात् तो श्रीजी मिलें नहीं पर चित्र में भी तैसे आकार के दर्शन सूं तैसे महा वाधक जो ताप हतो सो दूर भयो ताकूं कहें हैं

२५ -- **शीतलाकृतिः** --शीतल है ताप कूं मिटायवे वारो है आकार जिनको -- अथवा विरह के अति दुःख सूं थोरी सी कुपित भई श्री स्वामिनीजी आज्ञा करें हैं **शीतलाकृतिः** -- केवल आकृति ही शीतल है आप शीतल नहीं है आपके कहर आकार कूं शीतल देखके भी अंतर भी ऐसे शीतल होंयगे यह समझकर आपमें प्रीति वारी. भई जे स्त्री ताकूं जैसे कैसे प्रकार सूं मारे ही हैं यह देख्यो है पूतनादिकन में यह भाव --

गीतगोविन्द में भी -- **भ्रमतिभवानबलाकवलाय**[१] -- आप भ्रमण करो हो सो अबला जे स्त्रीजन विनके ग्रास करवे कूं ही ऐसे कह्यो है अथवा शीतल आकार हैं साधारण लोकन कूं ऐसें जानवे में आवे है के कामादि रस सूं अनभिज्ञ हैं अजान हैं एकांत में तो परम चतुर रसज्ञ शिरोमणि हैं यह भाव है ।

यासूं अपनी और भगवान की प्रवृत्ति निःशंक दिखाई आपस में रस प्रीति है पर शंका कोई को नहीं है यह सूचना करी । ऐसे आप की आकृति भी इष्टदायक है ऐसे निरूपण कर अब आपकी अवस्था के ही इष्टदायक भाव कूं वर्णन करें हैं --

२६-- **नवयौवनसंभिन्न श्यामामृतरसार्णवः** -- नवीन जो यौवन ता कर संभिन्न है कहा के संवलित है चारों और योवन वेष्टित कर रह्यो है यासूं अवस्था की संधि कथन करी नवीनता कहवे सूं अनंकुरित कूर्च है कूर्च जो मूछ ताको अंकुर मात्र भी नहीं भयो तासूं रति समय में अतिशयित सुख कूं अनुभव करावनो युक्त है । तैसे रस शास्त्र में हू **अंकुरित कूर्चकः श्रृतसितोपलाढ्यं पयः** हरणी दृशां - मृगनयनीन को अंकुरित कूर्चक जो प्रिय हैं सो तो ओट्यो भयो सितोपलादि संयुक्त दूध जैसो रस जनक है मनोहर है ऐसो कह्यो है तासूं वा यौवन सूं संवलित जे भावादि चारों ओर वेष्ट न कर रहे जे भावादिक तिनसूं भी अत्यन्त मोहे हैं यह भाव है । अब आगे समुदित स्वरूप मात्र में संपूर्ण स्वरूप में निविष्ट

---

[१] जयदेव श्री गीत गोविन्दम् अष्टम सर्ग श्लोक सं० ७ ।

भये आवेशवारे भये स्वामिनीजी वा स्वरूप में वर्ण मात्र भी रस रूप हैं याकूं वर्णन करें हैं --

श्यामामृतरसार्णवः -- जैसे दुग्धादि को स्वेत स्वरूप होय है तैसे श्याम रूप जो अमृत को रस ताके मंथन सूं ही जैसे भयो होय ऐसो ताको भी सार रूप ताको अर्णव है समुद्र है या अमृत रस की श्यामता कथन करी तासूं प्रसिद्ध जे स्वेत सुधारस तासूं अत्यन्त अलौकिक भाव की सूचना करी तासूं ता श्याम अमृत रस के समुद्र में रहवे वारे जे नयन, कुंडल, दंत, हस्त, चरण आदिकन कूं ही अलौकिक मीन, मकर, 'मणि', कमल आदि की सूचना करी और रस की निरवधि अगाधता कथन करी और या रस में मग्न भये कूं फेर या रस सूं न निकसवो भी सूचना करी अथवा श्यामा कहिये, शोडष वर्ष सम्बन्धिनी गोपी जन तिन सम्बन्धी जो अमृत रस अधरामृत रस सोई है अर्णव समुद्र जामें, यासूं अत्यन्त सरस असंख्य गोपी जनन के रस भोक्ता हैं । ऐसे कह्यो अथवा श्यामा जो षोडष वर्ष की गोपीजन तिनसूं ही है अमृत रस को समुद्र जामें और सूं नहीं है ऐसे यहां अमृत अधर सम्बन्धी ही जाननो ऐसे वर्ण कूं निरूपण करके विपरीत रमण में श्रीजी में श्री स्वामिनीजी को प्रतिबिम्ब भयो ताकी जे चाकचिक्यता वाकूं स्मरण करके श्री स्वामिनीजी आज्ञा करें हैं --

२७ -- **इन्द्रनीलमणि स्वच्छो** -- इन्द्र नीलमणि जैसे स्वच्छ निर्मल है तासूं जैसे मणि बाहर भीतर एक रूप

होय तैसे श्रीजी भी बाहर भीतर एक रस श्री गोपीजन भावात्मक हैं जैसे सुवर्ण जटित मणि की महा शोभा होय है तैसे सदा गोपीजन वेष्टित हैं तासूं सदा शोभावान हैं जैसे मणि में निकट रही वस्तु को प्रतिबिम्ब होय है तैसे श्रीजी में अपने प्रतिबिम्ब की सूचना करत श्रीजी के भीतर भी गोपी भाव की सूचना करी तैसे भगवान ने ही भागवत में -- **येत्पललोकधर्माश्वमद-र्थंताचिभर्म्यहंमयि ते तेषुचाप्यहं** -- जौनसों दुःर्ल्लभ भक्त मेरे लिये लोकवेद कूं त्याग करें हैं तिनकूं मैं आप पालन करूं हूं और वे भक्त मेरे भीतर रहें हैं विनके भीतर मैं रहूं हूं ऐसे कह्यो है । यहां मणि को दृष्टांत दियो तासूं जैसे मणि में श्यामता और सुन्दरता और साधारण लोगन की प्रीति होवे है मणि के गुणन सूं नहीं होवे है ताके गुण जानवे वारो जो परीक्षक ताकी तो केवल वाके गुणन सूं ही वामें प्रीति रहे है तैसे श्रीजी में भी सुन्दरता सूं सर्व साधारण की प्रीति है आपके भीतर विराजमान जो महारसिक भावादि हैं तासूं नहीं हैं, और आप में स्थित जे रसिक शिरोमणि भावादिक हैं विनकूं जानवे वारे तो केवल गोपीजन ही हैं । सो गोपीजन की ही आपमें रसिकनायक शिरोमणि भाव सूं ही प्रीति है यह सूचना करी । ऐसे स्वरूप और निर्मलताई कूं निरूपण कर क्रम सूं चिक्कड़ताकूं कहें हैं --

२८ -- **दलितांजनचिक्कणः** -- दलित घर्षित कीयो जो अंजन काजल रूप भयो सो जैसे चिक्कण होय सो तैसे चिक्कण है जैसे स्नेह लव्य सूं ही कज्जल की

उत्पत्ति होय है तैसे श्रीजी को हू प्राकट्य हमारे स्नेह सूं ही है यह सूचना करी । यद्यपि बारम्बार स्नेहादि द्रव्य मिलायवे सूं घर्षित भयो जो कज्जल ताकूं अंजन कहें हैं तासूं यहां अंजन कहे सूं ही दलित को अर्थ जो घर्षित सो तो आय जाय फेर न्यारो दलित कह्यो तासूं अति चिक्कण है यह सूचना करी अथवा यहां केवल कज्जल वाचक ही अंजन पद है । तासूं अंजन दृष्टांत सूं जैसे स्त्रीन के ही नयन भूषण अर्थ कज्जल कूं जन्म है तैसे गोपीजन वल्लभ को प्राकट्य भी यहां गोपिकान के अर्थ ही है तासूं इन गोपीजनन के ही नयनन में ही स्थिर है जैसे दुर्भगा के नयनों में कज्जल नहीं रहे है तैसे जाके नयनन में परम रसात्मक कज्जल सूं भी असंख्य अधिक स्निग्ध चिक्कण श्रीजी नहीं रहें हैं वाकूं दुर्भगा जाननो -- अथवा अंजन पद है सो ब्रज भक्तन के नयनन में स्थित जो अंजन ताको वाचक है -- तासूं दलित कहिये दो भाग वारो कियो है कहा के नयनन के ऊपर वारे भाग में और नीचे वारे भाग में रेखा रूप सूं दो प्रकार भयो जो अंजन सो भी है चिक्कण, जासूं ऐसे श्रीजी हैं । जब श्रीजी गोपी जनन कूं मिलें हैं तब ही विनके नयन कज्जल चिक्कण होय हैं नहीं तो विरह ताप सूं तो स्वाभाविक चिक्कण भी शुष्क होय है अथवा अपने श्री हस्त सूं करें हैं तासूं अति चिक्कण है जैसे गोपी जनन के नयनन में स्थित कज्जल भगवान सूं ही चिक्कण है तैसे भगवान भी ब्रज भक्तन के भाव स्नेहात्मक स्वरूप सूं ही चिक्कण

है स्नेह द्रव्य जे फुलेलादि तिनके लगायवे सूं चिक्कण नहीं है अथवा ब्रज भक्तन के नयनन में ही स्थित अंजन अपने अधर सूं दलित कियो है दो प्रकार को कीयो है विन नयन सूं अपने अधर में लगायो है तैसे अधरन में आये अंजन सूं चिक्कण है देखवे योग्य है स्निग्ध है । तासूं प्रातःकाल में और ब्रज भक्त के निकुंज सूं पधारे हैं तब तहां सगरी रात्रि रमण करवे सूं ब्रजभक्तन के नयन चुम्बन सूं आपके अधर हू सचिक्कण श्याम भये हैं ऐसी अलौकिक रीति सूं पधारे हैं । यद्यपि और ब्रज भक्त के घर सूं भी पधारे हैं तैसे रति के चिह्न भी हैं तासूं भी स्नेह को आप में तिरोभाव नहीं है किन्तु अति स्निग्ध है ताकूं देख के श्री स्वामिनीजी कूं श्रीजी में अति स्नेह उपजे ऐसे हैं, अथवा कोई महाभाग्यशाली समय में अपने प्रिय श्रीजी कूं अपने श्री हस्त सूं स्नान करावती भई अपने प्रिय के श्रीअंगों में जल की विन्दु मात्र भी स्थिर नहीं रह सके ऐसो दर्शन कर्‍यो । ताकूं स्मरण करके यह कहत हैं -- **दलितांजन चिक्कणः** -- याही सूं ही आगे श्री अंग के पोंछन कूं अपने अंचलन सूं करती श्रीजी के सर्व अंगन के स्पर्श सुख कूं अनुभव करत भयी ताकूं स्मरण कर कहें हैं --

२९ -- **इंदीवर सुखस्पर्शः** -- इंदीवर नील कमल जैसो सुख रूप है स्पर्श जिनको, केवल सुख के हेतु नही है किन्तु सुख रूप है सुख को जो हेतु होवे सो साधन कहावे, तासूं सुख न्यारो पदार्थ होवे, तासूं आप तो सुख रूप ही हैं । ऐसो ही आपको स्पर्श है सुख

रूप ही है अथवा इंदीवर सूं भी अधिक सुख रूप है स्पर्श जिनको, यासूं कोमल गात और सुगंधता अधिक दिखायी । यहां इंदीवर को दृष्टांत स्पर्श की उत्तमता में कह्यो है तासूं इंदीवर कमल लोक जन्य प्रसिद्ध नहीं है अलौकिक सुगंध वारो है रात्रि विकासी है तैसे यहां हू अलौकिक विलक्षणता सूचना करी तासूं अलौकिक सुगंध और रात्रि में सुखदायक की भी सूचना करी अथवा इंदीवर नीलकमल को भी सुख रूप स्पर्श जासूं होय है विरह में तो सो भी कठोर और उष्ण भासे है जब श्रीजी मिलें हैं तब ही ताकी कोमलता और सुगंध शीतलता को भाव होय है तासूं कह्यो इंदीवर सुख स्पर्शः -- अथवा इंदीवर पद सूं गोपीजनन के नयन जानने तैसे बिनके सुख रूप है स्पर्श कहा संबंध जिनको यह तो स्नान के पीछे जब परम कोमल निज वस्त्र के अंचल सूं श्रीजी के अंग पोंछन करें हैं तब सभी ब्रज भक्तन कूं सब रस रूप श्री अंगन को दर्शन होय है तासूं महा सुख को अनुभव भयो ताकूं स्मरण कर कह्यो इन्दीवर सुख स्पर्शः -- इनके आगे श्री कटि देश में सूक्ष्म ही पीतांबर कूं धारण करायकर स्थित जे श्रीजी के बिन केशन कूं जो प्रसाधन हैं कांकसी आदिन सूं ताकूं करावते भये श्रीजी कूं स्मरण कर आज्ञा करें हैं --

३० -- **नीरदस्निग्ध सुन्दरः** -- यहां नीरद पद सूं वर्षा करतो भयो मेघ कह्यो जाय है तासूं सो जैसे भीतर स्नेह वारी होय है तप्त जे हैं विनकूं जीवन रूप

नीर जो जल ताकूं दान करें हैं तैसे श्रीजी भी विरह तप्त जे ब्रज भक्त विनकूं जीवन रूप अमृत दृष्टि की वर्षा करें हैं भीतर हू स्निग्ध हैं और मेघ जैसे बाहर भी सुन्दर है ऊपर पीतांबर धारण करें हैं तासूं सहित विजुरी के जो घन ताकूं शोभावान हैं -- यासूं जैसे वृष्टि के प्रथम ही केवल मेघ के दर्शन सूं ही ताप की निवृत्ति होय है तैसे श्रीजी की कृपादृष्टि की वर्षा सूं ही प्रथम भी श्रीजी के आगमन सूं ही दर्शन सूं ही ताप निवृत्ति तो होय जाय है यह सूचना करी । अथवा नीरद जो मेघ तामें स्निग्ध कहिये स्नेह वारे मोर आदिक हैं तिन करके सुन्दर है तिनकी पिच्छ कूं धारण करें हैं ताके नृत्य कूं अनुकरण करें हैं ताके नृत्य तैसे कूंजन करें हैं तासूं श्रीजी को दर्शन करके मेघ मानकर मयूरादिक नाचत भये कूंजन करत ही श्रीजी कूं चारों ओर आवरण करके ठहरे हैं विनसूं आप सुन्दर हैं तासूं कह्यो - नीरदस्निग्ध सुन्दरः -- अथवा नीरद जो जल रस दान करतो भयो मेघ बिन जैसे स्निग्ध है वाणी करके आपकी वाणी स्निग्ध मेघ सरीखी है तैसे सुन्दर है स्वरूप करके सजल मेघ जैसे स्वरूप सुन्दर है यह अभिप्राय है ।। याके आगे सब ब्रजभक्त श्रीजी कूं तिलक कर चिबुक सूं प्रारंभ करके चरण तल पर्यंत कर्पूर अगरु कस्तूरी कुंकुम यह चारों समान सुगंधी इत्यादि सूं लेपन करे हे ताकूं स्मरण कर कहें हैं --

३१ -- **कर्पूरागरुकस्तूरीकुंकुमाक्तांगधूसरः** -- कर्पूर और अगरु और कस्तूरी और कुंकुम इनकूं कर लेपन

कियो जो श्री अंग तासूं धूसर भाव कर प्रतीत होवे है अंग राग है सो पीत है इन्द्र नीलमणि जैसे विग्रह नीलकांति है इन दोनों की जब कांति मिले है तब एक को भी रूप भिन्न प्रगट नहीं होवे है यासूं धूसर प्रतीति होवे है न के आप श्रीजी तैसे हैं यहां अक्त पद कह्यो ताको भाव यह है । अंगराग जो है सो स्निग्ध है ऐसे भी अति सुन्दर हैं यह जनायवे के अर्थ यह निरूपण कियो के धूसरः अथवा चारों सुगन्धित द्रव्यन सूं अक्त कहिये लेपन कियो, जो एक भी अंग सोई ही धूसर है ताको प्रतिबिम्ब सर्व अंगन में होय है तासूं सर्व अंश सूं धूसर प्रतीत होवे है याही लिये अंग पद कह्यो । वास्तव ते कर्पूर अगरु कस्तूरी कुंकुम को भिन्न-भिन्न नाम कह्यो तासूं कोई ब्रज भक्त कर्पूर घिसके लावे है कोई अगरु कोई कस्तूरी कोई कुंकुम भी अपने-अपने भावानुसार सुगंधित द्रव्य लावें हैं तामें जो भी आवे सोई ही अपनी वस्तु सुगंधित द्रव्य श्रीजी के सर्व अंगन में कई कई वार एक ही अंग में समर्पण करे है तासूं अनेक रूप कांतिवान है यासूं प्रथम कहे — इन्द्र नीलमणि स्वच्छः १. दलितांजन चिक्कणः २. इंदीवर सुखस्पर्शः ३. नीरद स्निग्ध सुन्दरः ४. कर्पूरागरुकस्तूरी कुंकुमाक्तांगधूसुरः ५. यह नाम पांच कहे तासूं क्रम सूं अर्थ १. काम, २. मोक्ष, ३. धर्म, ४. भक्ति ५. । पांच पुरुषार्थ रूप श्रीजी हैं तासूं ब्रज भक्तन के सर्व रूप आप श्रीजी हैं और कोई भी नहीं याके जनायवे के लिये आगे पीछे

पुरुषार्थन को निरूपण कियो अब आगे नख सूं ले शिखा पर्यन्त श्रृंगार कियो ता श्रृंगार वारे स्वरूप कूं स्मरण कर ताकूं ही निरूपण करें हैं

३२-- सुकुचित कचग्रस्तोल्लसच्चारु शिखंडकः-- ऐसे प्रथम कहे प्रकार सूं बिना अंग विभाग के समुदाय सूं संपूर्ण स्वरूप को निरूपण भी कियो पर ताप के अत्यन्त अधिक होयवे सूं चित्त में शांति न भई तासूं फेर ही अंग-अंग कूं वर्णन करें हैं तहां यद्यपि श्रीजी पुरुष हैं तासूं चरणन सूं आरम्भ करके वर्णन करनो उचित है तथापि ताप के निवारणार्थ याकूं निरूपण करें हैं तामें प्रथम दिन भयो जो ताप ताकूं दूर करवे अर्थ संध्या समय में जब श्रीजी वन सूं पधारें हैं तब दूर सों प्रथम अत्यन्त ऊंचो जो मुकुट ताको ही दर्शन होवे है तासूं पीछे मुखादि को दर्शन होय है सो अब भी तैसे ही पधारें के मेरे ताप कूं निवारण करें या अभिप्राय सूं मुकुट सूं आरम्भ कर ताप दूर करवे वारे स्वरूप कूं श्री स्वामिनीजी वर्णन करें हैं **सुकुचित इति** — सुन्दर कुंचित इकट्ठे किये जो कच कहिये केश तिन करके ग्रस्त कीयो अपनी गांठ के मध्य धारण कियो दृढ़ कर राख्यो है ऊंचो अत्यन्त शोभायमान मोरमुकट जिनके ऐसे श्रीजी हैं -- तहां श्रीजी के केश कुचित हैं इकट्ठे हैं पर तामें जा केश की जहां ठहरवे सूं सुन्दरताई होय तहां ही ताकूं स्थिर करें हैं यह संसर्ग सूं सूचना करी और कचन सूं मोरमुकट को ग्रस्त करनो कह्यो ताको आशय यह जो चारों ओर तो केश विनके मध्य

में मोरमुकट को मूल दृढ़ बांध्यो है सो मोरमुकट कों भय भयो के मोकूं सम्पूर्ण नहीं ग्रास कर लेवे या भय सूं आगे सूं ऊंचो होयके निकस्यौ सो अति शोभित भयो -- तामें शोभा के साधन जे पुष्प हैं गुंजा माला है मणि है नवीन-नवीन कोमल पत्र हैं तिनसूं मिल्यो है तासूं सर्व ब्रज भक्तन के मन के हरवे वारो है ऐसो मोर के पिच्छन को है मुकट जिनके ऐसे श्रीजी हैं। ऐसे उत्तमांग कूं वर्णन कियो तामें मोर पंख को रूप सुन्दर होय है ताकूं ऊँचो धारण सूं यहां भक्तन कूं पुरुषार्थ के दानादि में श्रीजी के रूप की ही प्राधान्यता है न के महात्म ज्ञान की भी यह सूचना करी याही सूं ही रूप के ग्रहण करवे वारे नयन वारेन को यही श्रीजी को मुख दर्शन ही फल है यहां -- **अक्षण्वतां फलमिदं** -- या श्लोक में श्रुतिरूपान ने निरूपण कियो है -- अथवा सुकुचित पद सूं केशन कूं वर्णन है सुकुचित केश हैं -- और कचग्रस्त पद सूं पुष्पन को वर्णन है। पुष्प हैं केशन के बीच में धारण किये भये हैं और उल्लसत्पद सूं चाकचिक्य वारे गुंजा मणीन कूं वर्णन करें हैं ऊपर गुंजा मणि हैं चाकचिक्य सूं प्रकाशित हैं ऐसे इन कर सुन्दर शोभित है मोरमुकट जिनको, वे केश पुष्प गुंजा मणि-मुकट के अंग हैं तासूं शोभा प्रकट करवे में मुख्य हैं स्वतन्त्रता सूं मुख्य नहीं है यासूं भिन्न-भिन्न नाम नहीं कह्यो और कुंचिता आदि धर्मन सूं शोभा प्रकट करें हैं। या लिये इनकूं निर्देश कियो। यासूं इनको क्रम भी जाननो प्रथम तो केश ताके ऊपर केशन सूं ग्रस्त

भये पुष्प हैं ताके ऊपर मणि है ताके ऊपर गुंजा है ताके ऊपर मोर चन्द्रिका है। ऐसे मुकट को निरूपण करके अलकन की पंक्ति में विराजमान कर्ण के ऊपर भाग में जे भूषण विनकूं वर्णन करें हैं।

३३--मत्तालिविभ्रमत्पारिजातपुष्पावतंसकः -- मत्त भये जे अलि कहिये भौंरा तिनसूं विभ्रमत् कहिये विलास कूं करत इत उत चलायमान जाके पत्र ऐसो जो पारिजात को पुष्प ताको है अवतंस कहिये कर्णाभरण जिनकूं ऐसे श्रीजी हैं यहां भौंरा मत्त है सो इन पारिजात के पुष्प के रस सूं ही मत्त है तासूं मत्त भये भी बिन पारिजात पुष्पन कूं त्याग करवे कूं अशक्त है। बिन पुष्पन की सुगंध में लिपटे भये मत्त होयवे सूं इत उत गिरे है चंचल होय है तासूं पारिजात को पुष्प भी चंचल होय रहे है चारों ओर भौंरान के संबंध सूं चंचल होयवे सूं पारिजात पुष्प की महा शोभा ही होय रही है याके सूचना के अर्थ विभ्रमत्पद कह्यो। विलास कूं करत शोभित ही होय है यह भाव है। अथवा मत्त भये जे अलि भौंरा वे भ्रमण कर रहे हैं जामें ऐसो जो पारिजात को पुष्प ताको है अवतंस श्री कर्णों में जिनके ऐसे श्रीजी हैं। मत्त होयवे सूं भौंरा सहित शब्द के गुंजार करे है और अपने स्वरूप कूं नहीं जानें है यासूं जैसे हीन पक्षी भौंरान कूं भी सब सूं उत्कृष्ट जे देवन के भोग्य योग्य पारिजात के पुष्प तामें भी श्री कर्णाभरण रूप विनके रस को पान करावो हो, मत्त भी है वे विनकूं निवारण नहीं करो हो और दोष कूं

भी नहीं गणो हो किन्तु ताके संबंध सूं शोभा कूं ही धारण करो हो । तैसे हम भी, आपने करोयो जो रसास्वाद तासूं ताके मद वारे हैं और अब वा रस के न प्राप्त होयवे सूं मद रहित हैं बहुत जल्पन कूं करें हैं केवल आपके ही आश्रय में हैं ऐसे हम कूं भी अपनो रस काहे कूं नहीं पान करावो हो । यह आशय सूं सूचना करी और यहां पारिजात को पुष्प थोरो थोरो लाल जाननो, कर्ण में लाल रंग की ही शोभा होवे है । अब श्रीजी के आगमन के समय में प्रथम संपूर्ण श्री मुख की ही शोभा दृष्टि के गोचर भई दर्शन कर्‌यो तासूं समुदाय सूं श्री मुख कूं वर्णन करें हैं --

३४ -- आननेन्दु जितानंत पूर्ण शारदचन्द्रमा: -- श्री मुख है सोई ही चन्द्र है तासूं जीते हैं तुच्छ कर दीयें हैं अनन्तपूर्ण शरद ऋतु संबंधि चन्द्र जाने, ऐसे हैं श्रीजी । यहां यह अर्थ है शरद ऋतु संबंधि असंख्य पूर्ण चन्द्र होंय ताकी जो सौन्दर्यता एक एक की भिन्न करके एक चन्द्र में इकट्ठी करी जाय तब वो भी चन्द्र श्रीजी के श्रीमुख की सौन्दर्यता के समान सौन्दर्य वारो नहीं होय है । यहां शरद ऋतु कही ताको आकाश को निर्मल होने सू और तारा आदिकन सूं शोभा अधिक होय है शरद में यह भाव है और श्री मुख कूं इन्दु कह्यो तासूं ताप कूं हरे है, कुमुद को प्रकाश करे है रात्रि कूं सुख देवे मार्ग कूं दिखावे है इत्यादि भाव की सूचना करी है । तासूं दिन में ब्रज भक्तन कूं विरह ताप रहे हैं रात्रि में तिनके ताप कूं हरे हैं ब्रज भक्तन के

नयन हैं सो कुमुद तिनकूं प्रकाश करें हैं, रात्रि में रमण सूं महा सुखदायक हैं और अंधकार में भी विन भक्तन के अर्थ वन में पधारें हैं, और ब्रज भक्त हू अंधकार में आपके मिलवे अर्थ पधारें हैं तब मयूर कोकिला आदि के शब्दन सूं संकेत की सूचना करी है ऐसे आप ही श्रीजी ब्रज भक्तन के हितकारी हैं यह भी सूचना करी । यासूं ही चारों ओर केशन में ग्रथित भये जे पुष्प विनसूं अनन्त नक्षत्र की शोभा कूं जीते हैं यह भी सूचना करी प्रथम श्री विग्रह कूं श्याम अमृत रस को समुद्र कह्यो तासूं विग्रह के ऊपर विराजमान जो श्री हैं ताकूं चन्द्रभाव कह्यो तासूं उदय चन्द्र भयो अत्यन्त शोभायमान है यह सूचना करी । और गोपीजन श्रीमुख में कुंकुमादि लगावें हैं तासूं और कुंडल मणि आदिकन की प्रभा सूं सदा राग सहित हैं यह सूचना करी । और प्रथम गोपीजन सम्बन्धित अमृत रस कूं ही समुद्र भाव कह्यो और ता श्रीमुख चन्द्र के दर्शन सूं ही गोपीजन सम्बन्धी अमृत रस के समुद्र की वृद्धि होय है यह सूचना करी और कामोद्दीपक भाव भी सूचना कर्‌यो । यासूं थोरो थोरो पांडुर भाव भी सूचना कर्‌यो । श्री स्वामिनीन के भाव सूं श्री स्वामिनीन में अत्यासक्त हैं तासूं कह्यो भी है -- **वदरपांडवदन:** -- जब गोपीजन श्रीजी के सम्मुख बैठकर श्रीजी के श्री मस्तक पर मुकट आदि कूं धारण करावें हैं श्री मुख में रति सूं भयो श्रम जल आदि ताकूं कोमल कर कमलन सूं मार्जन करें हैं अथवा रति में रस दायक वंध विशेष में विपरीत रमण में श्री

मुख पर दोनों श्री हस्त अथवा एक श्री हस्त देवें हैं तब अत्यन्त अलौकिक परिवेष की शोभा होय है और स्थल विशेष जो हृदय को मध्य भाग ताकूं चुम्बन करवे सूं ब्रज भक्तन के चकोर रूपी जो दो कुच तिनको वियोग ही करें हैं और यहां अनन्त चन्द्रन को श्री मुखचन्द्र सूं जय कर्यो जाय तिनको सर्वस्व हरण कर तुच्छ कीयो जाय तैसे श्री मुखचन्द्र के आगे यह चन्द्र भी तुच्छ भयो, सूर्य के आगे दीपक जैसे होय है और ता चन्द्र कूं जय कियो तासूं वा चन्द्र के धर्मन सूं ब्रज भक्तन के श्रीमुखचन्द्र के धर्म विरुद्ध है तासूं श्रीजी के श्रीमुखचन्द्र के दर्शन बिना विरह ताप सूं अत्यन्त सूक्ष्म भये जुदा-जुदा भये ताप सूं शुष्क भये जे ब्रजभक्तन के चकोर रूप कुच तैसे ही शुष्क भये ब्रजभक्तन के मुख कमल, हृदय कमल बिनकूं अपने उदय मात्र सूं संध्या समय में पधारवे सूं ही अत्यन्त हर्ष सूं भरे हैं ब्रजभक्तन के चकोर रूप कुचन कूं संयोग रस सूं महापुष्ट करें हैं। मुख कमल कूं और हृदय कमल कूं प्रफुल्लित करें हैं और लौकिक चन्द्र जाके उदय होयवे में प्रकाश होयवे सूं अभिसार जो प्रिय के संकेत में छिपकें जाय मिलनो सो नहीं बने है और यह अलौकिक श्रीमुख चन्द्र के उदे में तो अभिसार जो सब सूं छिपकें संकेत में परम प्रिय श्रीजी कूं मिलनों सो भी होय सके है इत्यादि सूचना करी याही सूं ही लौकिक चन्द्रन कूं जय करके विनकूं लांछित कलंक वारो करके छोड़ दियो यह भी सूचना करी। अथवा श्री मुखचन्द्र सूं जित कहिये वश

करी जे गोपी तिनमें जो विरह, ताप ताके मिटायवे कूं अनन्त कहिये गोपी गोपी के भावानुसार पूर्ण निष्कलंक पूर्ण रस दायक महा उद्दीपक शरद ऋतु सम्बन्धी श्री स्वामिनीजी के ही रस दायक चन्द्र हैं जैसे दिन में सूर्य सूं भये ताप कूं एक ही चन्द्र मिटावे है तैसे श्रीजी अपने विरह ताप सूं तप्त भये जे ब्रज भक्त विनके ताप मिटायवे कूं दर्शन आलिंगनादि सूं असंख्य चन्द्र जैसे शीतल है यह भाव है। ऐसे समुदाय सूं श्रीमुख कूं वर्णन करके अब प्रति अंग कूं वर्णन करें हैं --

३५ -- श्रीमल्ललाटपाटीरतिलकालकरंजितः --

श्रीमत् कहिये स्वभाव सूं महा सुन्दर शोभायमान जो ललाट श्रीमस्तक तामें पाटीर कहिये चन्दन को जो तिलक तिनसूं और अलकन सूं करके रंजित है शोभित है अनुराग कूं प्रगट करे है श्री मस्तक में तिलक आदिन सूं केवल शोभा नहीं है किन्तु श्री मस्तक स्वतः ही अति सुन्दर है यह जतायवे के लिये श्रीमत् पद कह्यो। तिलक है सो भ्रूअन के मध्य सूं केश पर्यन्त है। यहां केवल पाटीर के कहवे सूं श्वेत वा पीत तिलक मुख्य ता करके जाननो, और अलक तिलक कूं सामान्य, आधार एक श्रीमस्तक कूं निरूपण करवे सूं, अलकें कर्ण पर्यन्त स्थित है तैसे भ्रू के मध्य सूं केश पर्यन्त दो रेखा रूप तिलक कूं करके फेर तिलक के दोनों ओर सूं आडी चित्र रेखा कर्णन पर्यन्त करी है यह जान्यो जाय है और श्री मुख कमल के चारों ओर पंक्ति रूप सूं स्थित कुंचित भये श्याम रंग वारे केश अलक तिनसूं रंजित

हैं जैसे मंजीर वारें केश अलक तिनसूं रंजित है जैसे मंजीठे रंग सूं वस्त्र रंग्यो होय तैसे शोभित है पोंछवे सूं और मार्जन करवे सूं भी तिलक और अलकन की शोभा नहीं जाय है यह भाव है। अथवा अत्यन्त शोभित तिलक और अलकन सूं रंजित है राग का विषय है सब ब्रज भक्तन की प्रीति के पात्र हैं तासूं राग है सो जीव को धर्म है अनुराग वारे अलक श्याम हैं तिनकूं मधुप भाव सूचना करी है । तासूं श्रीजी के श्री मुख कमल भाव सूचना करें हैं तैसे तिलक कूं और रेखा कूं पीत होयवे सूं केशर पराग भाव जानने प्रीति के विषय हैं तासूं सरस है काहे कूं के भौंरान की सरस कमल में ही आसक्ति होय है नीरस में नहीं होय है। अलक रूप भौंरा श्रीमुख कमल में निरन्तर स्थित है तासूं या कमल कूं सदा सरसता जताई तासूं लौकिक कमल सूं विलक्षणता भी प्रकट है यासूं जैसे कमल सरस देश में ही स्थिर होवे है और प्रकट होवे है तैसे या कमल कूं हू प्रेम रस सूं सरस जे ब्रज भक्तन के हृदय रूप सरोवर तामें ही प्राकट्य स्थिरता ही है और स्थान में नहीं । और चकोर ब्रज भक्तन के कुचन की सहनिवास और सुगंध और कोमलता आदि सूचना करी अब क्रम सूं आप्त भ्रूव कूं निरूपण करें हैं --

३६ -- **लीलोन्नतभ्रूविलासः** -- लीला सूं उन्नत कहिये ऊँचो भयो जो भ्रू ताको जो विलास चलन विशेष सों तो वेणु के बजायवे के समय मूर्च्छना में स्वर की गतियों में अधिक इसके अभिनिवेश सों होवे ऐसे श्रीजी हैं ।

अथवा लीला जो वे वेणुवादन लीला तामें ऊंचो भयो जो भ्रू तिनमें मंद मध्य तार स्वरा के अनुकरण रूप है विलास जिनको वेणु के बजायवे में जैसे ऊंचो मध्य मंद स्वरा होय तैसे वाको अनुकरण भौरे सूं ही करें हैं, अथवा वेणु वादन लीला तामें ऊंचो भयो जो भ्रू तिनको है विलास जिनसूं विलास नाम संकेत स्थल की सूचना जिनसूं अथवा लीला कहिये मिथ्या कोय ऊंची भयी जो भ्रू तिनमें है विलास जिनको तब मिथ्या को ये समय विलास है सो भीतर तो क्रोध है नहीं तासूं किंचित हास्य कों प्रकट दिखायवे सूं किंचित टेढ़ो है लीला सूं ही है ऊंची भ्रू जिनकी तासूं कदाचित भी कोप सूं ऊंची नहीं होय है तासूं सर्व रस के हरवे वारो भय रस के प्रकट करवे वारो कोप के अभाव निरूपण सूं सदा रसदायक ही है यह सूचना कीयो । अथवा लीला में कहा के क्रीड़ा में अधिक भयो जो कामदेव को मद तासूं ऊंची भयी जो भ्रू तामें बंध आदि के सूचन करवे वारो है विलास जिनको अथवा लीला सूं रात्रि में भयी सुरत क्रीड़ा सूं प्रातःकाल ऊंची भयी जो भ्रू तिनका जो विलास कहिये आलस्य आदि भाव जिनको रात्रि भर ही जागरण भयो तासूं प्रातःकाल में कुमुद जैसे मुंदे भये जे नयन विनको जो रस विकास करवे वारो सुभ्रुव को ऊंचो भाव होवे है अथवा लीला जे गोपन के साथ सर्व लीला में उन्नत है उत्कृष्ट है भ्रूअ को विलास कहिये संकेत स्थल आदिक सूचना जिनकूं दिन में अत्यंत वियोग की आर्त्ति सूं जब स्वामिनीजी ब्रज

भक्त घर में स्थित नहीं होय हैं तब बन में कोई कार्य की मिस सूं पधारे हैं तब यद्यपि श्रीजी गोपन के मध्य में भी विराजे हैं तथापि भ्रू करके श्री स्वामिनीजी के प्रति संकेत स्थल आदि की सूचना सूं समाधान करत भये ऐसे ताकूं स्मरण करके कह्यो तासूं अब भी वियोग के अधिक ताप में तैसे करे यह अभिप्राय सूं अपने कूं तो यही ही हित है तासूं सर्व सूं उत्कर्ष को निरूपण यामे कीयो अब क्रम सूं नेत्रन कूं वर्णन करें हैं --

३७ -- **मदालसविलोचनः** -- असंख्य जे गोपी जन विनके जो मुख कमल तिनकी जो मधु कहिये रस, ताके पान करवे सूं प्राप्त भयो जो मद, तासूं मिले अथवा तासूं आलस्य वारे है लोचन जिनके, ऐसे श्रीजी हैं। ब्रज भक्तन के मुख दर्शन बिना और कार्य मात्र में न समर्थ होवनो भी आलस पद को अर्थ जाननो, तासूं श्रीजी के नयन निरंतर गोपी जनन के दर्शन में ही तत्पर है, और गोपी जन अत्यंत सरस है यह सूंचना है, याको गूढ़ आशय यह है जहाँ नयनन सूं भी दूर सूं भी ब्रज भक्तन के मुख कमल को मधुपान, मद कूं प्रकट करें हैं तहाँ साक्षात् अधर आदि सुधा के पान में कहा कहनो यासूं ही --

वहुमनुते तनुते तनुसंगत पवनचलतमपि रेणुम् धीर समीरे० ।[1]

इत्यादि प्रकार जयदेव के कथन में भी है - हे सखि तुमारे श्री अंग संबंधि जे पवन तासूं चलायमान जो रेणु

---

[1] जयदेव श्री गीत गोविन्दम् पन्द्रमा सर्ग श्लोक सं० २ ।

रज ताकूं भी बहुत मान देवे हैं अपने श्री अंग में लगावे हैं और श्री मुख सूं ही कहें हैं तुम ही मेरो जीवन हो, ऐसे वचन हेतु तहां कोई कहे यह तो कवि की चातुर्यता है, ऐसो नहि कहनो, काहे सूं के सो वस्तु ही ऐसी रस रूप है वामे सर्वरस प्रसंग संभवे है और भी है के महद जे है कृतार्थ प्रभुन के कृपा पात्र तिनको भी या में बहुत विश्वास है तासूं बहिर्मुखन कूं विश्वास नहीं होय तो, यामे हम को कहा हानि केवल खेद मात्र होवे है या प्रसंग में संक्षेप भलो, विस्तार में काल क्षेप होय है, तासूं मद जो ब्रज भक्तन कूं है मात्र आलसी है, असमर्थ हैं नयन जिनके, ऐसे मानादि तो प्रथम ही होय है। जब श्री जी पधारे श्रीजी की तो दृष्टि मात्र सूं ही सब ब्रज भक्त मान की टेक रहित होय जाय हैं विन ब्रज भक्तन के मन में मान निवृत्ति के पीछे भी यह रहे है कि मान करनो पर श्रीजी के नयन मान कूं देखवे में समर्थ है नहीं, तासूं श्रीजी के दर्शन भये पर, ब्रज भक्तन की दृष्टि मान करवे कूं समर्थ नहीं होय है। अथवा मद जो गर्व तासूं ही आलस भरे है नयन जिनके गर्व है सो नयन में ही रहे है सो तो कमल और खंजन और कामदेव आदि कूं जय सूं ही गर्व भरे नयन हैं श्रीजी के, अथवा मदालस जे ब्रज भक्त हैं वे हैं नयनन में जिनके, अथवा नयन जिनके, जब श्रीजी मिलने की अबधि कहे कर भी वा अवधि में नहीं आवे हैं तासूं पीछे आप जब संकेत में पधारे हैं और ब्रज भक्तन के पास दूती कूं भी भेजे हैं, प्रथम

अपने मुख सूं कही अवधि मिथ्या करी तासूं मान वारे भये ब्रज भक्त, दूती को वचन हू नहीं माने हैं नहीं आवे हैं तब विरह सूं श्रीजी जहाँ कहाँ ही ब्रज भक्तन कूं ही देखे हैं तासूं कह्यो **मदालसा** जे ब्रज भक्त वे जिनके नयनन में है अथवा नयन रूप ही है -- सोई कोई रसिक कवि ने कह्यो भी है **पर्यंक सेत्यादिना ।। सासासासा जगति सकल को यम द्वैतवादः ।** ऐसे श्लोक कर कह्यो है कि विरह गाढ़ दशा में सकल जगत में ही विनकुं अपनी प्रिया ही प्रिया नजर आवें है ऐसे कह्यो है यासूं तब विरह के समय में जैसे जहाँ कहाँ व्रज भक्तन कूं देखें हैं सोई श्रीजी अब हमारे वियोग कूं और अपने विरह सूं भये हमारे संताप कूं केसे सहन करें हैं यह हृदय को अभिप्राय है -- अब क्रम सूं प्राप्त नयन कूं स्मरण कियो तासूं इनकी अधिक सौंदर्यता प्रातःकाल में देखी है तासूं वा समय के ही विन नयनन कूं वर्णन करे हैं । प्रातःकाल में प्रथम आलस्य सूं ही रात्रि भर जागरण सूं ही नयन मुदे भये है पीछे बल सूं जोर सूं थोरे थोरे दृष्टि के खुलवे सूँ प्रथम तैसे नयनन कूं वर्णन करके अब तैसे दृष्टि कूँ हू वर्णन करे हैं ।

३८ -- आकर्णारक्त-सौन्दर्य-लहरी-दृष्टि-मंथरः -- कर्ण पर्यंत लांबे थोरे-थोरे लाल जे नयन ताकी सौंदर्य लहरी रूप जो दृष्टि सो मंथर है अल्प गतिवारी अलस गति वारी है जिनकी, यहां श्री स्वामिनीजी के हृदय में नयनन को सौंदर्य विराजे हैं तासूं ता सौंदर्य रस सिंधु में कहे जे लहरी रूप और मंथरगति रूप दोनों

धर्म विनकी मुख्यता है तासूं तिनको ही ग्रहण कियो कहा के वर्णन कियो, और नयनन की दृष्टि कूं लहरी भाव कह्यो तासूं नयन में सौंदर्य कूं समुंद्र भाव सूंचना कीयो यासूं सौंदर्य को निरवधि भाव कह्यो तामें दृष्टि कूं सरस जताई और जा देश में लहरी रूप दृष्टि प्राप्त होवे है तिस देश कूं शीतल करें हैं और रूक्ष कूं सरस करें हैं और पुल्लिंग वाचक तरंग पद नहीं कह्यो, स्त्रीलिंग वाचक लहरी पद कह्यो तासूं जैसो सजातीय कूं सजातीय वश करें हैं तासूं वे दृष्टि लहरी अपने अंतरंग कार्य जो रस सूंचनादिक है विन कूं स्त्रीन में जैसो करें हैं तैसो और में नहीं करें हैं तासूं ब्रज भक्तन कूं श्रीजी के पास लायवे कूं दृष्टि लहरी दूती महाचतुर है श्रीजी कूं और दूती की अपेक्षा हूँ नहीं रहे है, याही सूं ही ब्रजभक्त श्रीजी के दृष्टि लहरी रूप चतुर दूती की प्राप्ति मात्र सूं है ब्रजनाथ जे श्रीजी, ताके वश में होय भजन सेवन करे हैं, और दूती के भेजवे की अपेक्षा नहीं राखे है, यह निष्कर्ष है । तासूं श्रीजी के श्री अंग के एक देश की सौंदर्यता के एक देश सूं ही जहाँ ब्रज भक्त सबकूं छोड़ श्रीजी कूं भजन करें है तहाँ श्रीजी के सर्वांग सौंदर्य कूं देखकर श्रीजी के भजन कूं करें यामें कहा आश्चर्य यह भाव है । और सौंदर्य की लहरी रूप दृष्टि कूं कह्यो तासूं जैसे क्षीर सागर के जे तरंग होय हैं वे दुग्ध रूप होय है, तैसे सौंदर्य सिंधु की लहरी रूप दृष्टि भी सौंदर्य रूप ही है, यह सूंचना करी । और मंथर पद कूं अंत में कह्यौ, ताको भाव यह जो

रात्रि भर जागरण आदि सूं प्रातःकाल में श्रीजी तो अलसाने मौन कर विराजे हैं पर श्रीजी के नयन तो मंथर गति सूं भी अनेक कार्यन कूं करे हैं यह भी सूंचना करी । दृष्टि कूं लहरी कह्यौ है सो जैसे लहरी समुद्र के प्रांत भाग में ही तट में ही प्राप्त होय है रहे हैं तैसे प्रांत दृष्टि सूं नयनन की कोर में ही दृष्टि कूं सूंचना कीयो अथवा कर्ण पर्यंत और थोरी-थोरी लाल और सौंदर्य की लहरी रूप जे ब्रज भक्तन की दृष्टि सो जा श्रीजी सूं मंथर है ऐसे श्रीजी है सो जब ब्रज भक्त श्रीजी के नयनन की सौंदर्यता को दर्शन करे हैं तब ही श्रीजी के अंत्यन्त सौंदर्य के वश सूं श्रीजी के विन नयनन में ही ब्रज भक्तन की दृष्टि स्थिर होय जाय है ताकूं स्मरण कर कह्यौ -- **आकर्णारक्त सौंदर्य लहरी दृष्टि मंथरः** और श्रीजी के नयन के वर्णन प्रसंग में ब्रज भक्तन के नयन कूं वर्णन कीयो ताको आशय यह है जो ब्रज भक्तन के जे नयन हैं वे श्रीजी के नयन भाव कूं ही प्राप्त हैं यह भी सूंचना करी यद्यपि ब्रज भक्तन की दृष्टि स्वभाव सूं ही चपल है और कहू स्थिर होयवे वारी भी नहीं है तथापि ऐसी दृष्टि जब श्रीजी के नयनन में स्थिर होय गई है तब और विनके घ्राण आदि इंद्रियन की बात कहा कहें, ऐसे लहरी पद सूं श्रीजी में अलौकिक भाव सूचना कियो अथवा प्रथम कह्यो जो श्रीजी की दृष्टि मंथर मंद गति है तामे भी कारण का गोपीजन हैं. यद्यपि श्रीजी की दृष्टि महा चंचल है, तथापि ब्रज भक्तन के स्वरूप में स्थिर होय जाय है,

इत उत जाय नहीं सके है । तासूं ब्रज भक्तन कूं भी अलोकिक धर्म भाव सूंचन कीयो अथवा विपरीत रमण में श्रीजी के कर्ण पर्यंत वर्तमान जे ब्रज भक्त जन है तिन ब्रज भक्तन में राग-भार सूं लाल और वा समय की सौंदर्य लहरी रूप रति के वेग सूं अंति चंचल जे दृष्टि शोभा वरस-वरस के अधिक उद्वोध में मंद गति वारी है जिनकी ऐसे श्रीजी है । ऐसे रमण और वाको पर्यवसान समय वर्णन करके अब वाके उत्तर समय कूं वर्णन करें हैं --

३९ -- **घूर्णमान स्वनयनः** -- घूणर्यमान है नयन जिनके सोतो अनंत ब्रज भक्तन के संभोग रस रूप जो आसव मद् के बढ़ायवे वारो विलक्षण महारस है ताके अत्यन्त पान सूं वा रस भोग सूं ही श्रीजी के नयन अत्यन्त घूर्ण हैं सो घूर्णता तो पक्ष्म के मध्य में ही रहे है इत उत सहित आलस के जो मंद गंभीर तासूं पक्ष्मन को चलनो है तासूं ही घूर्णता प्रतीत होवे है अथवा घूर्ण कहिये मद भरे जैसे मान मद वारे ब्रज भक्त सो भी जा नयनन सूं अपमान कहिये गति वारे होय जाय है ब्रज भक्त मान के मद मे विराजे ही है परंतु जब श्रीजी के नयनन कूं देखे हैं विनकी कोर सूं वश भये तब मान मद स्थिर होयवे कूं समर्थ नहीं होय सके हैं । मान सूं चलाय मान होय जाय है निरभिमानी होय जाय हैं अथवा श्रीजी के मिलन अर्थ चलने लगे हैं ऐसे श्रीजी के नयन हैं । अब इनके आगे वा समय में क्षण के पीछे जब श्रीजी दृष्टि कूं पसारे हैं ताकूं स्मरण कर

कहें हैं --

४० -- संवीक्षण विचक्षणः -- संवीक्षण कहिये दृष्टि कूं थोरो सो वक्र करके वाकों करके एक भाग में करके जो देखनो तासूं विलक्षण है कहा के वा समय की आपकी सौंदर्यता अनिर्वचनीय है अनुभव सूं ही जानी जाय है कहवे कूं सामर्थ्य नहीं ऐसी शोभा है अथवा संवीक्षण जो नयनन के कोर सूं देखवो तासूं ही सब लक्षण चेष्टादि चिह्न सूं रहित कीये हैं जाने ऐसे श्रीजी है ऐसे आपके नयन दर्शन के अनंतर ही सब गति वारे जे है वे सब ब्रज भक्त गोप, पशु, गाय, पक्षि, यमुना आदि चित्रलिखे जैसे स्थिर हो जाय है चेष्टादि रहित होय जाय है अथवा संवी कहिये अल्प थोरे, ईक्षण, देखवो, जा समय में होय ऐसो जो प्रातः समय तामे कज्जल, कुंकुम रेखा, ताँबूल रस आदि सूं विशिष्ट लक्षण वारे हैं । रात्रि भर भयो जो रमण ताके सूंचना करवे वारे हैं अंग जिनके ऐसे श्रीजी हैं । वा समय में ही विलक्षण है आपको सौंदर्य, जो कह्यो नहीं जाय है अथवा संवी कहिये थोरो है ईक्षण देखवो जामे, ऐसी जो अंधियारी रात्रि, तामें वि जो पक्षी, मयूर, कोकिला आदि तिनके जो लक्षण तिस जैसे है कूंजन आदि जिनके ऐसे श्रीजी हैं यह तो जब दिनमें संकेत निश्चय करे हैं तब रात्रि में वा संकेत वारे सघन निकुंज में विराजे भये हैं बिन ब्रज भक्तन के आगमन कूं देख रहे हैं और वे ब्रज भक्त नील नीवी आदि कूं पहिर कर तैयार भयी अपने घर सूं पधारत अँधियारी रात्रि में महा

सघन वन में वा संकेत वारे स्थान कूं जानवे में असमर्थ जब होय है तब श्रीजी औरन कूं भी ज्ञान नहीं होय और अपने ब्रज भक्त ही जाने ऐसे संकेत वारे मोर कोकिलादि के शब्द कूं करे हैं तासूं कह्यो **संवीक्षण विचक्षणः** । तब तो ऐसे यत्न सूं हमारे ही ईष्ट मनोरथ कूं सिद्ध करे हैं सो अब काहे कूं हमारी उपेक्षा करे हैं यह भाव है । और मार्ग दिखावनो नयनन को ही कार्य है तासूं वा समय के कूंजन आदि संकेत मार्ग कूं दिखायवे वारे हैं तासूं नयन प्रकरण में ही याकूं कह्यो है अथवा मान सूं थोरे वक्र वांके नयन वारे जे ब्रज भक्त है तिनमें विलक्षण है कहा के विनके मान मनायवे आदि में चतुर हैं अब श्रीजी ने कीयो जो वंकेक्षण कहिये नयनन की कोर सूं देखनो ता समय में अपनी भई जे अवस्था ताकूं स्मरण कर श्री स्वामिनी जी आज्ञा करे हैं --

४१-- अपांगेरितसौभाग्यतरलीकृतलोचनः -- अपांग कहिये स्वभाव सूं थोरो सो नयनन कूं वक्र करके अंचल सूं जो देखनो है तद्रूप जो इंगित कहिये चेष्टित है तासूं जो सौभाग्य तिनसूं सरल करी है चंचल करी है सब ब्रज भक्तन की चेतना जाने ऐसे श्रीजी है यासूं श्रीजी के ऐसे सौंदर्य दर्शन के अनंतर अत्यंत आर्त्ति बढ़वे सूं और वा समय में रस मनोरथन के प्राप्त होयवे सूं मूर्छा अवस्था जब आवे है तब तो चेतना रहे नहीं है ताके पीछे चिर सूं मूर्छा के दूर होने पर समागम में ही चेतना कूं चंचल भाव होवे है अथवा अपांग जे कटाक्ष विनको

जो इंगित है कहा के सुरत की इच्छा रूप जो भाव विशेष है बाके जतायवे वारे जे आलस वलित भाव है दृष्टि के भावानुसार इत उत चेष्टा आदि है सोई ही ब्रज भक्तन को सौभाग्य हैं वासूं चेचल करे जे पूर्व सिद्धि पति व्रतादि लोक वेद धर्मन सूं रहित करे जे ब्रज भक्त विनके चेतन है प्राणरूप है यासूं श्रीजी की प्राप्ति में ही विन ब्रज भक्तन कूं जीवन होय है और प्रकार सूं नहीं होय है यासूं ही घर के भीतर जायवे सूं ही जिनकूं प्रतिबंध भयो विनको तैसो भाव प्रत्यक्ष भयो याही सूं विन ब्रज भक्तन ने भी **वदांयूयोन:** हमारे जीवन तो आपही हो ऐसे कह्यौ अथवा कटाक्षन की चेष्टा रूप सौंदर्यतरली जो सौंदर्य समुद्र है तासूं करे हैं चेतन जाने, ऐसे श्रीजी हैं । श्रीजी के विरह सूं ब्रज भक्तन को मूर्च्छावस्था होयवे सूं चेत नहीं रहे हैं जब श्रीजी आयकर तैसे कटाक्षन सूं देखे हैं तबही सबन कूं चेतन्यता होय है और इहाँ कृतचेतना कह्यो तासूं या सन्मार्ग में या काल में चेतना कूं नूतन भाव बोध कर्यो के प्रथम चेतनता सूं जो चेतना नई प्रगट करी है अथवा कटाक्षन की जो चेष्टा और सौभाग्य सौंदर्य विनसूं तरल करी है बुद्धि जाने, ऐसे श्रीजी है । जब श्रीजी प्रातःकाल औरके घर सूं पधारे हैं तब ब्रज भक्त मानसूं निश्चय करे हैं, कि याके साथ न बोलेंगे, पर आपकी जे कटाक्ष और सौंदर्यता तिनसूं मन चंचल होय जाय है, मानमें तैसे स्थिर नहीं रहि सके हैं, सब मान की टेक दूर होय जाय है अथवा निवृत भयो है श्री अंग जिनको

ऐसो जो अपांग कहिये अनंग कामदेव ता संवंधी जे इंगित क्रीड़ा रूप चेष्टा तासूं भयो अथवा तद्रूप जो हमारो सौभाग्य सुख तासूं तरल करी है चेतना कहा के सावधानता जाने सोतो रात्रि में महासुरत क्रीड़ा सूं श्रांत है और रात्रि भर जो जागरण कीयो है तासूं चरण अटपटे धरत है ऐसे जे ब्रज भक्त सो प्रातःकाल सावधान नहीं रहे हैं तासूं कहें हैं -- अपांगेरित सौभाग्य तरली कृत लोचनः -- ऐसे श्रीजी को सुरत क्रीड़ा समय के नाम कूं निरूपण कर और बहुत प्रकार के नयन सौंदर्य कूं निरूपण कर आगे वाके उत्तर काल के नाम कूं निरूपण करें हैं सो जब कोई समय श्रीजी ब्रज भक्तन की सभा में बैठके भुजा के प्रसारन आदि लीला हास्य कूं करते भये हास्य विशेष के लिये विन ब्रज भक्तन के संतोष के अर्थ थोरे से नयन कूं मूंदकर इत उत ब्रज भक्तन कूं देखत है तबी वह सौंदर्य विशेष अनुभव कीयो है वाकूं स्मरण कर कहे हैं --

४२ -- **ईषन्मुद्रित लोलाक्षः** -- थोरे-थोरे मुंदे थके है और चंचल है अक्षि जिनकी अथवा थोरे-थोरे मुंदित नयन जिनके सो तो सुरत रमण के अंत में है और चंचल है नयन जिनके सो तो **श्लिष्यति कामपि चुंबति कामपि** कोऊ कों तो आलिंगन करे हैं और कोऊ कों तो चुंबन करे हैं इत्यादि गीत के कहे प्रकार सूं ब्रज भक्तन के यूथ के रमण में व्यग्रता सूं चंचल नयन हैं या प्रकार सूं दोय नाम ही जाननो अथवा लोला नाम शोभा तासूं थोरे-थोरे मूँदवे सूं भई जो शोभा तासूं मिले

है नयन जिनके, दीर्घ नयनन के थोरे-थोरे मूंदवे सूं अधिक ही शोभा होय है यह तो अनुभव सिद्ध है अथवा जब संकेत स्थल में रसिक शिरोमणि श्रीजी ब्रज भक्तन के आयवे सूं प्रथम पधारे है तब ब्रज भक्तन के आयवे के समय में श्री मुख ऊपर सूंक्ष्म वस्त्र कूं ओढ़के मिथ्या शयन करें हैं और या भेद कूं बिन ब्रज भक्तन के न जनायवे के लिये नयनन कूं थोरे-थोरे मूंदे हैं कि ये ब्रज भक्त आयके का करत है कहा कहत हैं यह जानवे के लिये मिथ्या पोढे थके ही वाट देखें हैं, और चंचल तो ये न होय है, कहा के इत उत देखे है तब इतने में ब्रज भक्त आयकर श्रीजी कूं पोढ़े जान अपनी-अपनी एकांत में भई वार्तान कूं कहे हैं और आपस में चुंबन आलिंगन आदि करे हैं इतने में कोई ब्रज भक्त जब श्रीजी कूं निंद्रित जान चुंबन करवे लगे तब श्रीजी अचानक उठकर वा ब्रज भक्त कूं पकड़ कर चुंबन कर लेवे है और ब्रज भक्तन की आपस में भई जो वार्ता वाकूं कहे हैं, तब सब ब्रज भक्त आपस में देखत ही सहित लज्जा के हंसत हैं तब महारस होय है । वाकूं स्मरण कर कह्यौ -- **ईषन्मु** । अथवा जब अंचल सूं थोरो सो छिपो भयो और थोरो सो प्रकट श्री स्वामिनी जी को हृदय देश प्रकट होय है तब बाके देखवे के अर्थ बारंबार वाकूं देखे हैं वाकूं स्मरण कर कह्यो "ईषन्मु" तासूं ही कहिये थोरो छिपो भयो जो ब्रजभक्तन के हृदय कमल वामें चंचल नयन वारे है यह अर्थ भयो अब क्रम सूं प्राप्त नासा कूं वर्णन करें हैं --

४३ -- सुनासापुट सुंदरः -- शोभन जे नासा पुट तिनकर अतिसुंदर है मन कूं मोहन करें हैं शोभनता तो सुवर्ण सूंत्र में ग्रंथ्यो भयो जो मुक्ता फल वैसरता कूं धारण करें हैं और समान है और ऊँची है । इत्यादिकन सूं जाननी और पुटपद कह्यौ सो जैसे दो पत्रन को कीयो जो दोना होय है वह रस द्रव्य के स्थापन करवे में और पान करवे में उपयोगी होय है सो तैसे यहां भी नासा के दोनो भाग के जो अवयव है वे पत्रारूप है और परम सूंक्ष्म ऊची दोना रूप नासा है सो सौंदर्य अमृत को स्थान रूप है यह भाव सूंचना करी यासूं ही वा नासा सूं कटिरी भई सौंदर्यता को निरूपण कीयो । ऐसे सौंदर्य को निरूपण करवे में प्रथम कोई समय नासा के मुक्ताफल वेसर सूं और कूंडलन सूं अधिक शोभा सौंदर्य कूं देखकर सहज सुंदर जे कपोल विनको चुंबन करत भई है वाकूं स्मरण करके अधर के वर्णन सूं प्रथम कपोलन कूं निरूपण करे हैं सो कपोल हैं कुंडल और नासा वेसर की प्रभा सूं व्याप्त है और कुंडल हैं कर्ण में ही रहे हैं सो एक संबंधि के स्मरण में कपोल कुंडल और कर्ण तीनों कूं ही स्मरण कर कहें --

४४-- गंड प्रांतोल्लसत्कर्ण मकराकृति कुंडलः -- गंड जे प्रफुल्लित कपोल विनके प्रांत में समीप में भाग में उल्लसत प्रकाश मान शोभित जे कर्ण संबधि मकरा कृत कुंडल जिनके ऐसे श्रीजी हैं अथवा कपोलन के समीप है शोभायमान जे कर्ण तिनके संबंधि मकराकार

PURNIMA GIRISH BAXI

कुंडल जिनके तासूं कर्णन में कुंडलन सूं शोभा नहीं है किंतु कर्ण स्वयं ही अति सुंदर हैं यह सूंचना करी और श्रीजी के नयन तो अत्यंत सरस है तैसे कर्ण सरस नहीं हैं ऐसे कोई को विरुद्ध ज्ञान होय तो ताके निवर्त करवे लिये कर्णन में मकराकार कुंडलन कूं ही धारण करें हैं वे मकर हैं जो सरस देश में ही रहे है । सो मकराकार कुंडल कर्णन में निरंतर रहें हैं तासूं कर्ण भी रस मय हैं यह जतायो तासूं जैसे नयन के ही दर्शन सूं महासुख होय है आपके कर्णन के दर्शन सूं भी महारस भाव होय है यह भाव है अब ता कपोलन के चुंबन सूं अत्यंत प्रसन्न भये जे श्रीजी तिनके मुख कूं देखके श्री स्वामिनी जी आप भी अत्यंत आनंदित भये हैं ताकूं स्मरण करके कहे हैं के --

४५ -- **प्रसन्नानंदवदनो** -- प्रसन्न है आनंद रूप है वदन श्री मुख जिनको कबहूँ आप अपराध सूं सकुचे है पर तामे भी श्रीजी के श्रीमुख कूं प्रसन्न देखके श्री स्वामिनी जी आनंदित होय गयी है ताकूं स्मरण करके कह्यो -- **प्रसन्नानंदवदनो ।** यासूं कोई अपराध सूं जब श्रीजी नहीं मिले है यह शंका हू दूर करी अथवा प्रकर्ष करके सन्न कहा सूंक्ष्म है वियोग सूं कृश जो ब्रज भक्त हैं विनके आनंद रूप हैं वदन श्री मुख जिनको सो विरह सूं अत्यंत कृश भये ब्रज भक्तन कूं श्रीजी के श्री मुख दर्शन सूं ही महा आनंद उत्पन्न होय है तासूं कह्यो सो यह नाम प्रसंग में उपयोगी है कहा के अब भी श्री स्वामिनी जी श्रीजी के वियोग सूं महाकृश है तासूं

अब प्रथम जैसे आनंद दान करवे कूं कह्यो -- **प्रसन्नानंद वदनः ।** अथवा प्रसन्न है प्रकट आनंद रूप है श्री मुख जिनको, अथवा प्रसन्न जो गोपी तासूं आनंद युक्त है श्रीमुख जिनको सो तो जब आयवे के समय कूं कहेकर और के घर रात्रि कूं गुजार कर प्रातः काल श्रीजी आवे हैं तब वह स्वामिनी मानादि सूं कुपित होय रही हैं तब श्रीजी मान मनायवे कूं **वदसि यदि किंचिदपि** या गीत के अनुसार प्रार्थना करें हैं मान निवर्त भये पर प्रथम जैसे प्रसन्न प्रफुल्ल मुख प्रकट अनुराग वारी जो गोपी ताकूं देख श्रीजी भी आनंदित होय जाय है अब तो मेरी प्रार्थना में हू मोकूं आनंदित काहे कूं नहीं करें हैं यह भाव है ।

ऐसे या प्रकार स्मरण सूं संताप के होयवे सूं अत्यन्त आर्त्ति करके वा संताप की निवृत्ति कूं इच्छा करत श्रीजी के श्रीमुख कूं चन्द्र रूप सूं निरूपण करें हैं ।

४६ -- **जगदाह्लादकाननः** -- जगत के आनन्द देवे वारो चन्द्र रूप है आनन कहिये श्रीमुख जिनको, यासूं सबके आनन्द देवे वारो श्रीजी हमकूं काहे कूं नहीं देवें हैं यह भाव है । अथवा श्री स्वामिनीजी अत्यन्त संताप सूं तप्त हैं तासूं ताप के शांत करवे कूं श्रीमुख कूं चन्द्र रूप करके फेर वर्णन करें हैं के यह श्रीमुख ही मेरे ताप के हरवे वारो है, और कछु नहीं है यासूं पुनरुक्ति दोष न जाननो सो संपूर्ण जगत के आनन्द करवे वारो है श्रीमुख जिनको यह चन्द्र तो सर्व कूं ही आनन्द देवे

है सो चकोर रूपी जे ब्रजभक्तन के कुच विनको सदा आनन्द देवे वारी है तहां कह्यो है -- **ता सामा विर्भूत् अनुग्रहायभक्तानां** इत्यादि श्लोकन में कह्यो है के ब्रजभक्तन के अर्थ ही प्राकट्य है अथवा प्रथम नाम सूं आल्हाद के स्मरण करवे सूं कोई समय श्रीजी श्री स्वामिनीजी के मिलवे सूं भयो जो आल्हाद विनसूं हसन् मुख होय है वा समय की शोभा कूं स्मरण कर कह्यो सुस्मेर कहिये प्रसन्नता सूं सुन्दर मंदहास्य सूं धारण करी जे सौंदर्यता तासूं प्रकाश वारे किये दशों दिशा के मुख जाने यासूं ही श्रीजी के दंतन की शोभा उच्छलित होय है जब दंतन को दर्शन भयो तब विनके प्रकाश कूं वर्णन कर्‌यो याही सूं ही तब दंतन कूं दर्शन भयो तासूं आगे दंत और अधर कूं वर्णन करें हैं ।

४७ -- सस्मेराधरलावण्य-प्रकाशीकृतदिङ्मुखः -- सुस्मेर कहिये प्रसन्नता सूं सुन्दर मंद हास्य सूं धारण करी जे सौन्दर्यता सूं प्रकाश वारी किये दशो दिशा के मुख जाने यासूं ही श्रीजी के अधर की शोभा उच्छलित होय है विनको प्रकाश कूं वर्णन कर्‌यो याही सूं ही तब अधरन कूं दर्शन भयो तासूं आगे दंत और अधर कूं वर्णन करें हैं --

४८ -- सिन्दूरारुण-सुस्निग्ध-माणिक्य-दशनच्छदः- सिन्दूर जैसे अरुण हैं लाल हैं और स्निग्ध कहिये चिक्कण अथवा जाकूं देखके प्रीत उपजे ऐसे जे थोरे थोरे लाल रंग वारे अमूल्य जे माणिक्य मणि तिन सदृश जे दंत तिनका छद आच्छादन करवे वारो अधर जिनको

ऐसे श्रीजी हैं। श्रीजी को अधर है सो सिन्दूर जैसो लाल है और अधर की कांति के प्रतिबिम्ब सूं लालमाणिक्य जैसे जे दांत तिनको आच्छादन करें हैं ऐसो है अधर जिनको, अथवा सिन्दूर जैसे लाल अधर हैं और सिन्दूर जैसे लाल दंत पंक्ति है और माणिक्य जैसे चाकचिक्य वारे दांत और अधर हैं ऐसे अर्थ है। यासूं जैसे मणि तो सबकूं ही प्रिय है तथापि ताके मर्म स्वरूप गुणादि के जानने वारो और वाकी वार्ता में जाको मन लग्यो होय ऐसो परीक्षक जन तो कोई ही होय है तैसे श्रीजी प्रिय तो सबकूं हैं परन्तु मर्म के जानवे वारो और महासुरत में भयो जो दंतक्षत अधर पान वाके रस वार्ता में आसक्त परम रसज्ञ परीक्षक तो ब्रजभक्त ही है यह सूचना करी तासूं विन दंतन में और अधर में ब्रजभक्तन को अधिक स्नेह भी है यह भी सूचना कियो, और सिन्दूर को दृष्टांत दियो तासूं याके रस सूं रहित जे है वे दुर्भागा हैं ऐसे सूचना करी, और जैसे माणिक्य शोभन होय है और टेढे नहीं होय हैं और दीर्घ नहीं होय हैं ऐसे श्रीजी के दंत परम सुन्दर और टेढे नहीं हैं, और लम्बे नहीं हैं अथवा सिन्दूर जैसे लाल जे अधर तामें स्नेह वारे जे ब्रजभक्त तिनमें माणिक्य दंतन के समूह है जिनके ऐसे श्रीजी हैं। अथवा ब्रजभक्तन में हैं माणिक्य रूप दंत और अधर जिनके ऐसे श्रीजी हैं, और यहाँ माणिक्य पद कह्यो तासूं जैसे माणिक्य आभरणन सूं अधिक शोभा होय है तैसे ब्रजभक्तन में श्रीजी के दंत क्षत अधर ताम्बूल के चिह्नन

सूं भी अधिक शोभन होय हैं ऐसे श्रीजी दंतक्षत आदि करें हैं । तब श्री स्वामिनीजी तामें सीत्कार करें हैं तब हंसत-हंसत रसिकराय जी पूछें हैं का पीड़ा होय है तब तो प्रथम सूं भी अधिक सुख अनुभव में आवे है वाकूं स्मरण कर कहें हैं --

४९ -- **पीयूषाधिकमाध्वीक सूक्त श्रुतिरसायनः** -- पीयूष अर्थात् अमृत सूं भी अधिक है मधु जामें ऐसो है सुन्दर मन के हरवे वारो उक्ति कहिये कथन जिनको ऐसे श्रीजी हैं । वाणी सूं बिन ब्रज भक्तन के विरह ताप कूं दूर करें हैं ताकूं स्मरण कर कहें हैं -- **श्रुति रसायनः**-- श्रुति जो ब्रजभक्तन के श्रवण इन्द्रिय ताके सम्बन्धी सदा हितदायक रसायन रूप हैं अथवा पीयूषाधिक माध्वीक सूक्त श्रुति रसायनः । यह सम्पूर्ण वाक्य ही एक नाम जाननो अमृत सूं अधिक परम मधुर जे सूक्ति सुन्दर वचन हैं तासूं ब्रज भक्तन के जे श्रुति श्रवण इन्द्रिय वाके रसायन हैं रस के आश्रय रूप हैं और यहां सुन्दर वचन कूं माध्वीक भाव कह्यो तासूं श्रीमुख कूं अति सरस कमल भाव कह्यो सूचना कियो, और सरस कमल में तो सदा भ्रमर रह्यो ही आवे है तासूं यहां भी ब्रजभक्तन के नयनन के चुम्बन सूं अधरन में जे काजर रेख लगी है वे भ्रमर हैं यह भी सूचन कियो, याही सूं ही अवधि कूं ही कहकर और दूसरे भक्त के घर पधारवे सूं वा स्वामिनी कूं श्रीजी के न पधारवे सूं वियोगार्त्ति करके मूर्च्छा होयवे सूं तब प्रातःकाल पधारकें ऐसे मीठे वचन मृदु वचन सूं समाधान करें हैं जासूं वे वचन ब्रजभक्तन के श्रवण में रसायन रूप महासुखदायक लगे हैं । ऐसे जे सुन्दर वचन रस विनके अर्थ हैं आश्रय रूप हैं ऐसे श्रीजी के उक्ति के निरूपण करवे में रास के प्रारम्भ में प्रथम आये जे ब्रजभक्त विनके प्रति जे श्रीजी नें -- **''स्वागतं वो महाभागा''** इत्यादि वचन कह्यो विनकूं स्मरण करत भये तब तो श्रीजी वचन सूं निवारण करत भी वा समय के ललित त्रिभंग ललित स्वरूप सूं मोहित करके अपनायके रस कूं दान करत भये तैसे अब भी करें या अभिप्राय सूं ताही स्वरूप कूं निरूपण करें हैं --

५० -- **त्रिभंगललितः** -- तिनके जे अंग ग्रीवा, कटि और चरण इनमें जो भंग कहिये अन्यथा भाव टेढो करनो अथवा तीन प्रकार को भंग तासूं ललित है अत्यन्त सुन्दर है । जब त्रिभंग ललित होय है तब वेणुनाद में ही अत्यन्त निवेश होय है । तासूं वा समय में वेणुनाद और वाम परावर्त वाम भाग में नयनन की कोर सूं देखनो यह दोनों ही स्त्रीन के मोह करवे वारे हैं तासूं वा समय वेणु नाद और वाम दृष्टि सूं भयी जे शोभा वाकूं स्मरण कर कह्यो है --

५१--**तिर्यग्ग्रीवः** -- तिर्यक करी है ग्रीवा जिनने सो वाम कंधा के स्पर्श कर रह्यो है वाम कपोल जिनको याही सूं ही युगल गीत में कह्यो भी है -- **वाम वाहुकृत वाम कपोलः** -- इत्यादि गीत सूं वर्णन है सो देव स्त्रीन कूं व्यामोह करवे वारो वाम परावर्त ही वाम ओर देखत ही जे वेणुनाद है सो वर्णन कियो है और तहां कोई

कहे के दो अंग में वा चार अंग में भंग भाव टेढ़े होनो काहे कूं नहीं कहें हैं यह आशंका दूर करवे कूं त्रिभंग के तात्पर्य रूप नाम कूं कहे हैं --

५२-- **त्रैलोक्य मोहनः** -- याको यह अर्थ है तीन लोक रूप तीन अंगन में अन्यथा भाव करवे सूं तीनों लोक के अर्थ भागरूप जो प्रथम रूप ताको त्याग रूप अन्यथा भाव सिद्ध करें हैं और भी है के तीनों ही अंगन में एक एक अंग भी त्रिलोकी के मोह करवे की समर्थ हैं ताकूं दिखावें हैं । श्री कंठ में त्रिवली है सो वेद त्रयी को स्वरूप है, कंठ के अन्यथा भाव करवे सूं वेद त्रयी में कहे थके कर्म मार्ग के त्याग कूं सिद्ध करें हैं और कटि है सो सूक्ष्म है और नाभि है सो गंभीर है सो भी शून्य को रूप है सो निर्गुण ब्रह्म की उपासक कि समाधि रूप जे कटि और नाभि वाके भंग करवे सूं ज्ञान मार्ग कूं त्याग करावें हैं निर्गुण ब्रह्म के जे उपासक वे भी निराकार ब्रह्म की उपासना करें हैं मर्यादा भक्ति रूप दक्षिण चरण के अन्य भाव और पुष्टि सूं उपजे अत्यन्त स्थिर वाम चरण है वाके आश्रय सो कटि नाभि है सो सूक्ष्म भाव सूं शून्य रूप है तासूं ब्रह्म रूपता है सो या रीति सूं भागवत सूं विरोध नहीं होय है और मर्यादा रूप विहित भक्ति ताकूं त्याग करावे है और पुष्टि रूप कामादि मार्ग सूं भजन कूं सिद्ध करें हैं याही सूं ही गोपीन के अर्थ ही यह स्वरूप प्रकट कियो है, और मर्यादा आदि के त्याग के न होयवे सूं और या स्वरूप सूं औरन को भी जो मोह करें हैं सो तो जैसे कामिनी

तो केवल अपने नायक के मन प्रसन्न करवे कूं कस्तूरी की खोर करें हैं और के लिये नहीं करें हैं तथापि कस्तूरी की गंध तो कोई सूं रुके नहीं है सो गंध तो सखीन के भी अनुभव में आवे है पर वा रस को भोक्ता तो नायक है तैसे यह स्वरूप है सो तो केवल ब्रजभक्तन के अर्थ ही है औरन कूं तो रस स्वरूप के स्वभाव सूं ही रस मोहादि होय है पर वाकूं भोक्ता तो केवल ब्रजभक्त ही हैं ऐसे अपने मोहक स्वरूप कूं कथन करके वा मोहन में सहायक रूप जो अधरामृत सहित वेणुनाद वाकूं वर्णन करें हैं ।

५३ -- **कुंचिताधर-संसक्त-कूंजद्वेणु-विनोदवान्** -- कुंचित कहिये संकोच वारो कियो जो अधर तासूं भली प्रकार सेंचो है याही सूं कुंजन रसोद्दीपक शब्द वारो जो वेणु तामें जो विनोद अनेक प्रकार की जे मूर्च्छन आदि ता वारे हैं अथवा विनोद कहिये विशेष प्रकार सूं नांद कूं उपजावनो तासूं कोई कूं तो मोह होय है कोई को तो जड़ता कोई कूं चेतनता सो कह्यो है । **निशम्य संगीत अनंगवर्धनम्** । यामें कामदेव की वृद्धि सूं मोह को होवनो स्पष्ट है । **और कुंजगतिंगमितान-विदामः** । यामें **वृष्ट दान** की गति प्राप्त होयवे सूं जड़ भाव स्पष्ट कह्यो और **आस्पंदन गतिमतोपुलक-स्तरूणां** । यामें वृक्षादि कूं भी जड़न कूं भी चेतन भाव स्पष्ट कह्यो और अधर का सेचन करण निरूपण कियो तासूं अमृत भाव सूचन कियो काहे कूं, के सेचन है सो द्रवीभूत द्रव्यन सूं होवे है सो श्रीमुख में और तो

कोई द्रव्य असंभव है तासूं अमृत ही है और संचन में सें उपसर्ग कह्यो तासूं आप साक्षात् वेणुनाद के श्रवण सूं हमकूं भी ता रस सूं आर्द्र करें हैं जैसे कोकिल आदि के कूंजन सूं रस को उद्बोध होय है यह रस शास्त्र में सिद्ध है तैसे वेणुनाद सूं रस कूं उद्बोध होय है यह हमारे अनुभव सूं सिद्ध है यह कूंजन पद कहवे को अभिप्राय है । और वि जो द पद कह्यो अनेक प्रकार को जो विलास नांद है सो मोह करें हैं तासूं मोह के सहाय होयवे सूं हम सबन कूं मोह करवे में श्रीजी कूं प्रयत्न कभी नहीं होय है यह भाव है ऐसे वेणु कूं वर्णन करके वाके आधार कूं वर्णन करें हैं -

५४ -- कंकणांगद केयूर मुद्रिकाविलसद्भुजः --

कंकण और वाके ऊपर अंगद ताके ऊपर केयूर बाजूबंद और कोमल अंगुलीन में मुद्रिका आदि पद सूं नख भूषन इत्यादिक भूषण सूं शोभायमान हैं भुजा जिनकी, ऐसे श्रीजी हैं अंगुली आदि हैं भुजा के अंग हैं तासूं मुद्रिकान सूं भी भुजा की शोभा कही है अथवा ऐसे वेणु वर्णन में जब कोई समय में वेणु सूं श्री स्वामिनीजी कूं नाम लेकर बुलावें हैं तब वाकूं सुनकर एकांत में आयकर श्रीजी की भुजा में ही अपनी भुजान कूं धारण करत भई और श्रीजी भी श्री स्वामिनीजी की भुजा में अपनी भुजा कूं धरत भये तब स्वामिनीजी के और श्रीजी के कंकण आदि सूं अत्यन्त शोभायमान श्रीजी के भुजान कूं दर्शन भयो ताकूं स्मरण करके कहें हैं --

कंकणेति -- तासूं यहां कंकण आदि स्वामिनीजी

के जानने ऐसे तो क्रम हू युक्त होय है श्रीजी के भुजा के मध्य में स्थित जे बाजूबंद वाके ऊपर मुद्रिका आदि की स्थिति होय है यहां आदि पद सूं सुवर्ण के कंकण और कांच के कंकण नख भूषण आदि मेरे हृदय में विराजमान अनेक ही हैं तासूं शोभित भुजा है अथवा कंकण अंगद और केयूर और मुद्रिका है आदि में जिनके ऐसे भूषणन सूं शोभित हैं भुजा जिनकी ऐसे श्रीजी हैं तब क्रम सूं कौस्तुभ आदि को दर्शन भयो तासूं विनकूं वर्णन करें हैं --

५५ -- स्वर्णसूत्रसुविन्यस्तकौस्तुभाभुक्तकंधरः --

स्वर्णमयी सूत्र में सुन्दर रचना वारो परोयो जो कौस्तुभ मणि आभरण तासूं आमुक्त कहिये व्याप्त है कंधर कहिये स्कंध के भीतर के भाग, मध्य देश के जिनको, ऐसे श्रीजी हैं, अथवा स्वर्णमय सूत्र में सुन्दर रचना सूं परोयो भयो जो कौस्तुभाभरण तासूं युक्त और चारों ओर मोतीन के सहित और विशाल है कंधरा कहिये श्रीकंठ देश जिनको, अथवा प्रथम सुवर्ण सूत्र सूं श्रीकंठ में धारण कियो भयो जो कौस्तुभ, पीछे रमण समय में इनकूं अंतराय होयवे सूं वाधक होयवे सूं बड़ो कियो तासूं कह्यो के कौस्तुभाभरण सूं चारों ओर सूं मुक्त है खुली है कंधरा श्रीकंठ जिनको ऐसे श्रीजी हैं --

५६ -- मुक्ताहारलसद्वक्षःस्फुरच्छ्रीवत्सलांछनः --

मुक्तामय हारन सूं ऊंचो अत्यन्त शोभायमान है वक्षस्थल जिनको स्फुरत् कहिये प्रकाशमान है वक्षस्थल को श्रीवत्स रूप लांछन जिनको ऐसे श्रीजी हैं मुक्ताहार सूं

उल्लास वारो वक्षस्थल तासूं प्रकाशमान जो श्री लक्ष्मी तिस जैसे सलांछन है जैसे लक्ष्मी को वक्षस्थल श्री भगवान के नख चरण आदि सूं चिह्नित है भगवान् को लक्ष्मी के नख चरण कुंकुम कज्जल आदि सूं चिह्नित है ऐसे श्रीजी हैं । श्री स्वामिनीजी श्रीजी की भुजा कूं अपने हाथ में धारण करत भये वाकूं स्मरण जब आयो तब यह नाम कह्यो तासूं ता समय में श्री स्वामिनीजी के परम रस रूप कर स्पर्श सूं भयो जो रोमांच और आनन्द आदिक ताके स्वभाव सूं ही श्रीजी के हृद्य जो स्तन सो अवधि सूं बढ़के ऊंचे भये अति प्रसन्न देखे हैं ताकूं स्मरण करत भये और गोपीन को त्याग कर लक्ष्मी को दृष्टांत दियो तामें श्री स्वामिनीजी को आशय यह है जब श्रीजी कोई गोपी के निकट होते तो मोकूं यह दुःख नहीं होतो काहे कूं के सब ब्रजभक्तन की आपस में निष्कपट प्रीत है अथवा तब विरह के स्वभाव सूं दुःख भी होय पर तब प्रिय ही सहन नहीं करते अथवा प्रिय कठोर भी होय सहन करें भी वे ब्रज भक्त नहीं सहन करते जोर सूं भी श्रीजी कूं यहां ले आवते शीघ्र ही तासूं श्रीजी ब्रज भक्तन के निकट नहीं हैं किन्तु लक्ष्मी के समीप में हू हैं तासूं अब कहवे सूं है का विस्तार करे --

५७ -- **आपीनहृदयो** -- आ कहिये चारों ओर सूं पीन है स्थूल है हृदय जिनको, स्तन कर मध्यदेश जिनको, वह तो ऊंचो होय है तो सुन्दर होय है अथवा महाबलवान जो ब्रजभक्तन के कुच हैं हृदय में जिनके

ऐसे श्रीजी हैं, अथवा महापुष्ट जे ब्रजभक्तन के हृदय तिनमें ही सदा प्रवेश करें हैं स्पर्श करें हैं आनन्दित रहें हैं । अब श्रीजी के वक्षस्थल में स्थिति जो माला तिनकूं कहें हैं --

५८-- **नीपमाल्यवान्** -- नि कहिये निरन्तर ई कहिये कामदेव ताकूं जे पान करें हैं वाकूं कहें नीप । तासूं रचित जे माला तिस वारे श्रीजी हैं । नीप शब्द सूं सूक्ष्म कदम्ब के पुष्प और कदम्ब वृक्ष दोनों ही लिये जाय हैं, तासूं यहां कदंब के पुष्प ही लेने ताकी माला कूं धारण करें हैं सो काम को रक्षक जो कदंब तिनसूं भये जे काम की रक्षा करण वारे पुष्प तिनके धारण सूं सदा श्रीजी काम सहित हैं यह सूचना करें हैं । तासूं ऐसे सकाम होयवे सूं भी श्रीजी में अपने इष्ट भाव कूं सूचन करें हैं--

५९ -- **बंधुरोदरः** -- वंधुर कहे ये निम्नोनत सो तो मध्य देश में किंचित ऊंचो और पार्श्व देशों में और नाभी सूं थोरे ही नीचे देश में थोरो सो निम्न है नीचो है उदर जिनको, ऐसे श्रीजी हैं । अथवा श्रीजी को नाम हरि है और सिंह को नाम भी हरि है तासूं सिंह के समान धर्म वारे वंधु सिंह ही कहे जाय हैं । तासूं तिन सिंहन कूं रा कहिये अपने समान करें कृश तासूं सो कहिये बंधुर ऐसो है सिंह के उदर जैसो कृश उदर जिनको, और

६० -- **संवीतपीतवसनो** -- संवीत कहिये वेष्टित है पीत वसन जिनको, ऐसे श्रीजी हैं । अथवा ब्रजभक्तन

कूं जो अंग देखवे की इच्छा रहे है पीत वसन है सो वाके दर्शन में अंतराय करे है तासूं श्रीजी पीत वस्त्र कूं कब दूर करेंगे ऐसे उत्साह सूं ब्रजभक्तन की दृष्टि पीत वसन कूं ही आवरण करके ही रहे है यासूं कह्यो -- **संवीत** -- ब्रजभक्तन के नयनन सूं ही वेष्टित है पीत वसन जिनको, और यामें ऐसी दृष्टि सूं वेष्टित कि अत्यन्त गोप्य होयवे सूं ही संवीत मात्र कह्यो अथवा यह उत्तरीय वस्त्र उपरना को वर्णन जाननो, सो वस्त्र भी आलिंगन में अंतराय है तासूं यह कब दूर होयगो ऐसे ब्रजभक्तन की दृष्टि उसी वस्त्र में ही रहे है तासूं कह्यो संवीत । अथवा जब कोई समय में मान सूं भयो जो विरह तासूं कह्यो -- **संवी०** अत्यन्त कायर भयी जो स्वामिनीजी वाने अचानक प्रकटे जे श्रीजी विनकूं दौरके भली प्रकार आलिंगन कियो तब अपने हृदय और भुजा कंकण अंचल आदि सूं श्रीजी को पीत वसन उपरना सों वेष्टित होय गयो ताकूं स्मरण कर कह्यो सो वेग ही तैसे ही कौन रीत सूं होय या मनोरथ सूं यह नाम कह्यो --

संवीत पीत बसनो -- अथवा सं कहिये भली प्रकार मिस सूं त्याग कियो है संध्या के समय अभिसार के लिये एकांत में प्रिय के मिलवे अर्थ त्याग दियो है ग्रह आदि जिनने, ऐसे जे ब्रजभक्त विनमें है पीतवसन जिनको, सो तो जब श्रीजी प्रथम अनेक बंधन सूं परम रस कूं प्रकट करें हैं तब ता रस के स्वभाव सूं ही तैसे रस के अधिक होयवे सूं स्त्रीन कूं नायक भाव

होय जाय है तब श्रीजी को पीत वसन धारण करें हैं ता प्रकार सूं ही रस योग्य ही होय हैं तासूं कह्यो- **संवीत पीत वसनो** -- अथवा संपूर्ण रात्रि जागरण सूं रमण के श्रम सूं ही सावधान नहीं हैं सो तासूं प्रातःकाल उठत ही श्रीजी को वस्त्र ब्रजभक्तन को वस्त्र श्रीजी में होय है तासूं कह्यो -- **संवीत पीत वसनः ।** अथवा सं कहिये भली प्रकार सूं ही त्याग कियो है पीत वसन रमण समय में जाने ऐसे श्रीजी हैं ।

६१ -- **रसनाविलसत्कटिः** -- प्रथम महामणि हीरे आदि सूं जटित और सुवर्णमय सूत्र में परोये वदराकार मुक्ताफल जाके, मध्य देश में ऊंची श्रृंखला वारी कामदेव के जय कूं सूचना करवे वारे घंटिका घुंघुरुन सूं पिरोई भई जे स्वर्णमयी रसना है तिस करके विशेष शोभायमान है कटि जिनकी, ऐसे श्रीजी हैं, अथवा विपरीत रमण में ब्रजभक्तन की रसना सूं विशेषकर शोभायमान है कटि जिनकी, सो स्वयं सघन मेंघ जैसे स्याम कटि में विविध रंग वारी मणि आदिकन सूं अधिक शोभा होय है सो वि० शब्द को अर्थ है । अथवा रसना जो है सो है विलास, कहा के विजेयक्षि विन कूं अपने शब्द के समान शब्द सूं अपने समान करवे वारी है, ऐसी रसना सूं सत कहिये विलास वारी कटि जिनकी, अथवा रसना विलास वारी जासूं है ऐसी कटि जिनकी, यासूं श्रीजी की कटि में रसना सूं ही शोभा नहीं है किन्तु कटि तो स्वयं ही सुन्दर प्रत्युत कटि की शोभा कर ही रसना में भी शोभा है यह भाव है । अथवा

ब्रजभक्तन की रसना में है विलास वारी कटि जिनकी, अथवा रसना सूं विलास वारे जे ब्रजभक्त हैं, वे हैं कटि में जिनके, ऐसे श्रीजी हैं । अथवा नृत्य कूं स्मरण कर यह कह्यो तासूं नृत्य रसना सूं विशेष कर के लसत कहिये नृत्य सूं शोभा वारी कटि जिनकी, नृत्य में कटि कूं चलावें हैं तो विशेषता कही ऐसे कटि कूं न वर्णन करके वाके नीचे स्थित जे पीतांबर वाकूं वर्णन करें हैं --

६२ -- **अंतरीयपटीबंधप्रपदांदोलितांचल:** -- अंतरीय कहिये कटि वस्त्र धोती तिनको, जो घटी कहिये किनारी, तिनमें जो बंधन है, तासूं प्रपद कहिये, पाद के अग्र भाग में आंदोलित है अंचल जिनको, ऐसे श्रीजी हैं । और यहां कटि वस्त्र कहवे सूं बंधन तो आय ही गयो तब फिर भी जो बंधन को निरूपण कियो ताको आशय यह है, जो जैसे नृत्य समय में कमलाकार, आकार सूं धोती बांधी जाय है तैसे बंधन यहां भी हैं, ताही सूं ही अंचल को पादाग्र में आंदोलन होय है, और अंचल के आंदोलन कहवे सूं मधुर नृत्य जतायो है । अथवा अंतरीय जो कटि वस्त्र वाको जो घटी बंधन को प्रकार विशेष, तासूं पाद के अग्र में चंचल है अंचल जिनको, अथवा अंतरीय जो धोती वा पर जो घटी कहिये ब्रजभक्तन की नीवि ताके बांधवे सूं चरण पर्यंत आंदोलित हैं अंचल जिनमें ऐसे श्रीजी हैं । सो जब सब ब्रजभक्त एकांत में मिलकें बैठे हैं अपनी अपनी रहस्य कथा कूं कहैं हैं विनके मध्य में श्रीजी विन ब्रज

भक्तन की नीवि आदि पहिर के विनके वेष कूं धारण करके ऊपर स्थूल वस्त्र सूं श्रीमुख कमल कूं दुरावते थके अपनी सिखाई भई जे सखी, तिनके मध्य में होयकर जैसे यह ब्रज भक्त न जान सकें, तैसे कौतुक करवे कूं धीरे धीरे मधुरी गति सूं भली प्रकार पधारे हैं । तब नीवी के अंचल कूं ही श्रीजी के चरणन में आंदोलित देख्यो है ताकूं स्मरण कर यह कह्यो है अथवा कोई समय एकांत में श्रीजी और स्वामिनीजी आपस में आलिंगन करें हैं तब श्रीजी के कटि वस्त्र ऊपर श्री स्वामिनीजी की नीवी को अंचल आंदोलित होय है वाकूं स्मरण कर यह कह्यो -- **अंतरीय पटी ।** तब तो ऐसे सुख के दायक हते सो अब काहे कूं तैसे सुख नहीं देवे हैं यह भाव है । अथवा कटि वस्त्र के स्थान जो घटी नीवी वाके जो बंध कहिये बांधनो तासूं पाद के अग्र में आंदोलित है अंचल जिनको ऐसे श्रीजी हैं । यह तो रात्रि भर जागरण करवे सूं भयो जो आलस्य तासूं और काम युद्ध में जय सूं भयो जो श्रम तासूं सावधानता रही नहीं है, नयन घूर्णायमान होय रहे हैं, ऐसे भये श्रीजी अपने पीतांबर कूं छोड़के ब्रजभक्त के वस्त्र कूं जैसे तैसे बांध के पधारते जे श्रीजी विनके चरण में नीवि को अंचल आंदोलित होय रह्यौ, वाकूं स्मरण कर यह कह्यो, अथवा अंतरीण पाठ होय तो तब ऐसे अर्थ होय है अंतरांण जो भीतर को अंग विशेष वापर जो पटी बंध पीतांबर को बंधन ताको श्री चरण में आंदोलित है अंचल जिनको ऐसे श्रीजी हैं । अथवा

अंतरीय पटी बंध/प्रपंदांदोलितांचलः । यह दो नाम जानने ताको दिखावे है अंतरीय पटी जो ब्रजभक्तन की नीविन में है बंध कहिये हस्त बंध जिनको, सो तो प्रथम समागम की लज्जा सूं अथवा अंतर्गत ताप सूं अथवा मान सूं रमण के न अंगीकार करवे सूं भयो जो आग्रह सूं ही नीवी के ऊपर अपने श्री हस्त सूं आकर्षण करे है, वाकूं स्मरण कर कह्यो । जैसे तब अपने आग्रह सूं नीवी स्पर्श करत भये तैसे अब हमारे आग्रह सूं नीवी स्पर्श करे यह भाव है । और अंचल पद कह्यो सो ब्रजभक्तन के अंचल सों लेनो, सो तो जब श्रीजी एकांत में पधारे हैं वे ब्रजभक्त भी कंकुम आदि सुगंधित द्रव्य जलन सूं श्रीजी के चरणन कूं प्रक्षालन कर, अपने अंचल सूं चरणन कूं पोंछन करें हैं, तब श्रीजी के चरण में ब्रजभक्तन को अंचल चंचल होय है सो वाकूं स्मरण कर यह कह्यो अब भी वेगि पधारो यह भाव है ।

आगे श्रीजी के उरु घोंटू आदि अवयवन को दर्शन तो कोई समय विशेष में होय है और समय तो पीतांबर सूं आवृत्त है तासूं विनमें अति गोप्य भाव कूं जानकर विनकूं वर्णन करके अब चरणारविन्द कूं ही वर्णन करें हैं अथवा वियोग की उत्कृष्ट दशा सूं श्री स्वामिनीजी विकल हैं सावधान नहीं हैं सो पीतांबर के प्रसंग सूं प्रपद कूं स्मरण भयो, तासूं तिनको संबंधि जो ताकूं ही प्रथम स्मरण करत भई, और अंगन को विस्मरण भयो सो अरविन्द इत्यादि दो श्लोकन सूं कहें हैं –

६३ -- अरविन्दपदद्वंद्वकलक्वणित नूपुरः --

अरविन्द कहिये कमल, ता रूप जो चरण, द्वंद विनमें कलक्वणित कहिये अव्यक्त मधुर शब्द वारे हैं नूपुर जिनके, ऐसे श्रीजी हैं । यहां अरविन्द कह्यो तासूं श्री चरण हैं ताप कूं हरें हैं और सरस हैं गोपिन के कुच चकोरन के सहचारी हैं इत्यादि भाव सूचना कीये । जैसे कमल सब सरस देश में नहीं प्रकटे है, किन्तु कोई सरस देश विशेष में प्रकटे है, किन्तु यह चरणन के रस करके सहित जो कोई एक महाभाग्यशाली हृदय तिनमें प्रकटे है, और कमल के मध्य में जैसे जल मात्र भी नहीं होय किन्तु मकरन्द होय है तैसे इनके भी बंध आदिक में हृदय आदि स्थल में स्थापन करवे सूं जो रस होय तिनसूं सदा मिले हैं न के ज्ञानि कूं रस रूप जो अक्षरानन्द सामान्य रस तिस वारे हैं तासूं ज्ञानीन के अविषय कहवे के लिये ही द्वंदपद कह्यो । और विनकी तो अद्वैत दृष्टि होय है द्वंद में दृष्टि नहीं जाय सके तो या रस की प्राप्ति क्यों कर होय और भी है कि खिले भये कमल सूं ही मकरंद की प्राप्ति होय है सो कमल को खिलनो तो सूर्य की किरणन सूं होय है सो यहां भी विरह ताप सूं ही यह रस की प्राप्ति होय है और ज्ञानीन कूं तो विरह ताप को अभाव है तासूं कमल को विकास नहीं होय तो वाको रसास्वाद कहा मिले, यद्यपि ताप भी होय पर वा ताप के दूर करवे वारो कमल चहिये वा ज्ञानीन के हृदय में वे ताप मिटायवे वारो श्रीजी के चरण कमल द्वंद्व है नहीं तो ताप क्यों कर मिटे कैसे रस मिले तासूं ज्ञानीन को

यहां कोई काम नहीं है यह तत्व है । तासूं वा कमल को तो ब्रजभक्तन के हृदय में विकास है और रस दायक भाव है । यह भाव सर्वस्व है कमल में पराग चहिये सो यहां श्री गोपीजन को कुंकुम ही पराग है ध्वजा आदि जे रेखा हैं वे केसर हैं कुंच कुंकुम कूं पराग होयवे सूं ही ब्रजभक्त ने **पूर्णापुलिंद्यः** या श्लोक में तैसे कुंकुम कूं ही ताप के मिटायवे वारो कह्यो है मकरंद सूं मिल्यो भयो ही पराग ताप कूं मिटावे है । यहां भी प्रथम कह्यो जो बंध विशेष में हृदयादि में स्थापन सूं भयो रस तासूं मिल्यो भयो है सो यही **दयितास्तन मंडितनयना** या पद सूं सूचना करी याही सूं ही ऐसे श्री चरण कमल द्वंद्व संबंधी कुंकुम पराग के दर्शन मात्र सूं ही स्मरताप होय है और वाके अपने मुख कुच आदि अंगन में लेपन करवे सूं ताप की निवृत्ति भी होय है **अलंविस्तरेण** सुवर्ण हीरा इन्द्र नीलमणिन सूं मिले भये चारों ओर सों लंबायमान मोतीन के गुच्छा हैं विनके आगे अनेक प्रकार के पट्ट सूं रचित सूक्ष्म सूक्ष्म फोंदा हैं वे पुष्प हैं नूपुर हैं सो भौंरा हैं थोरे थोरे चलन सूं अव्यक्त मधुर शब्द कूं करें हैं अथवा अरविन्द जे ब्रजभक्तन के हृदय कमल विनमें विराजमान जे श्रीजी के पद द्वंद्व बंध विशेष में दोनों चरण तिनमें अव्यक्त मधुर औरन कूं सुनायवे के अर्थ अव्यक्त और सहायक तासूं मधुर शब्दायमान हैं नूपुर जिनके, अथवा रति श्रम के निवारण अर्थ चरण चांपत में ब्रजभक्तन के हस्तकमलन में विराजमान जे श्रीजी के पद द्वंद्व तिनमें अव्यक्त मधुर शब्द वारे हैं नूपुर

जिनके, यह भी प्रथम भयो जो ऐसो रसदायक समय ताकूं स्मरण कर कह्यो अथवा अरविन्द जे कमल विनके पद कहिये स्थान जो यमुना पुलिन तामें जो द्वंद्व है -- **अंगनामंगनामंतरे माधवः** । या प्रकार सूं गोपी गोपी प्रति एक एक स्वरूप यासूं गोपी माधव द्वंद्व रूप हैं विनमें अव्यक्त मधुर शब्द वारे हैं...... जिनके वा समय कूं........ स्मरण कर कह्यो ऐसे चरण को ऊपर को जो रूप है तासूं कह्यो है --

६४ -- **बंधुकारुणमाधुर्य सुकुमारपदांबुजः** -- बंधुक जो लाल पुष्प विशेष तिस जैसे अरुण अथवा तिस सूं भी अधिक अरुण और माधुर्य रूप और सुकुमार रूप ऐसो है चरणकमल जिनको, अथवा बंधूकारुण पद सूं कुंकुम लेनो तासूं तिस कुंकुम सूं है माधुर्य, कहा के सौंदर्य जिनकूं ऐसे ब्रजभक्तन के हृदय कहिये कुच तिनमें है सुकुमार परम कोमल लक्ष्मी के कर स्पर्श में भी व्याकुलता कूं पावत ऐसो चरण कमल जिनको, अथवा सुकुमार सु कहिये अत्यन्त कुत्सित है मोर कहा कामदेव जिनते, कहा के कामदेव सूं भी अत्यन्त सुन्दर हैं चरणकमल, सो ब्रजभक्तन के कुचन में बिराजे हैं तासूं कुच तो अत्यन्त कठिन हैं विनमें परम कोमल चरणकमल धारण करे हैं ऐसे ब्रजभक्तन के लिये तो अपने क्लेश कूं भी श्रीजी कहा गिनें हैं यह सूचना करी और पद कूं अंबुज कह्यो सो अंबुज पद सूं सूर्य भी लगनो सो जैसे अरुण होय है ताप कूं करें हैं तैसे यह चरण भी अरुण दर्शन मात्र सूं ताप कूं प्रगट करें हैं ।

URNIMA GIRISH BAXI

तासूं आगे के नाम कूं स्मरण कर कहें हैं --

६५ -- **नखचन्द्रजिताशेष दर्पणेषुमणि प्रभः** -- नख रूप एक ही चन्द्र सूं जीते हैं, तुच्छ कियो है संपूर्ण दर्पण और चन्द्र और मणीन की प्रभा जानें ऐसे श्रीजी हैं । निर्मलता और चाकचिक्य और ताप कूं दूर करनो और मंडलाकारता की प्रभा सूं अपनी प्रभा कूं तिरस्कार न होवनो इनमें कोई भी अंश में न्यूनता नहीं होय है यह दिखायवे कूं दर्पण और चन्द्र और मणि यह तीनों को नाम लियो, और सामान्य रीति सूं दर्पण चन्द्र मणि एक भी नख चन्द्र के समान नहीं यह कह्यो । तहां कोई कहे एक-एक दर्पणादि समान ही होंयगे पर मिले भये बहुत दर्पण चन्द्रमणि तो समान हो सकेंगे या शंका कूं निवारण करवे कूं बाहिर भीतर सुन्दर उज्ज्वल है अति कोमल देश सूं प्रकटे हैं महाभाग्यवान जे ब्रजभक्त विनके हृदय के बाहिर भीतर सदा भूषण हैं यह भी सूचना करी मणि जैसे है इनसूं विपरीत है, इनकी प्रभा के बिना और की प्रभावारे तो निष्फल ही हैं, प्रकाश रहित ही होय हैं । इनकी प्रभा ही सब प्रभा को मूल है । ऐसे प्रभा कूं जय कहो, और चाकचिक्य दर्पण कूं उपमान ही होय सके, और श्वेतता में चन्द्रमा उपमान ही होय सके, और लालिमा में मणि भी उपमान नहीं होय सके, यह भी "दर्पणादितीन" के कहवे को अभिप्राय है तासूं इनकी सौंदर्यता को वर्णन नहीं होय सके है यह भी सूचना करी याही सूं ही जय ही कही न के तिनके सदृश कह्यो । अथवा नखचंद्र सूं वश करी जे राधा मुख्य स्वामिनी तिसकी शेष रूप है दर्पण चंद्रमणिन की प्रभा जिसते ऐसे श्रीजी हैं । प्रथम विरह ताप में शोभा के विकल होने से पीछे श्रीजी के संगम भये सूं ऐसी शोभा भई जासूं दर्पण चंद्रमणिन की शोभा लजाय गई याही सूं ही श्री स्वामिनीजी कूं विरह ताप होयवे सूं श्रीजी के नखन कूं तिस ताप के मिटायवे सूं ही चंद्रभाव निरूपण कियो; अथवा नख दान सूं और चंद्र जैसे शीतल ताप के मिटायवे वारे दशन कहिये रद दान तिनकर जिता, कहिये रति रमण में वश करी जे स्वामिनी, तिसकी शोभा सूं शेष कहिये तुच्छ हो गई है दर्पण चंद्रमणिन प्रभा जिस श्रीजी सूं ऐसे श्रीजी हैं । श्रीजी सूं प्राप्त भये रस जाकूं ऐसे श्री स्वामिनीजी की शोभा प्रातःकाल तैसी होय है जासूं दर्पण चंद्रमणीन की भी शोभा तुच्छ होय जाय है ऐसे नखन कूं वर्णन कर अब श्री चरण के तल भाग में विराजमान जे रेखा विनकूं वर्णन करें हैं --

६६ -- **ध्वजवज्रांकुशांभोज-राजच्चरण पल्लवः** -- चरण कूं आश्रित करके जे स्थित है विनकूं कहूँ सूं भी भय नहीं है वे सदा निर्भय स्थित रहे यह जतायवे कूं श्री चरण चिह्न धारण करे हैं और अपने ब्रज भक्तन कूं विरह सूं भयो जो हृदय में रुकनो सो महापर्वत है ताके विदारण करवे कूं चरण में वज्र के चिह्न कूं धारण करे हैं श्रीजी के दर्शन अनंतर चरण कमल कूं हृदय में स्थापन सूं विरह सू भयो जो रोध सो निवर्त होय है यह भाव है और ब्रज नाथ जो श्रीजी आपने

दीयो जो महारस ताके मद सूं मत्त भये जे व्रज भक्तन के मन रूपी हस्ती विनके मान दूर करवे सूं अंकुश रूप चिह्न धारण करे हैं और ब्रज में भक्तन के विरह ताप मिटायवे कूं कमल के चिह्न कूं धारण करे हैं तासूं ध्वजा, वज्र, अंकुश, अंभोज इन करके शोभायमान हैं चरण पल्लव जिनके ऐसे श्रीजी हैं । तासूं चरण में धारण किये जे यह चिह्न इनके ही सफल करवे कूं मेरे ऊपर कृपा करो, यह भाव है । और यहां चरण कूं पल्लव भाव कह्यो पल्लव है सो आंब आदि को नवीन अंकुर है सो जैसे सरस वसंत में ही प्रकट होय है और कामजनक है रस पोषक है कोमल स्पर्श होय है ताप कूं हरवे वारो होय है रमण शय्या को उपयोगी होय है तैसे यह चरण पल्लव भी तैसे रस सूं सरस ब्रजभक्तन के हृदय में ही प्रकट होय है कामजनक है रस पोषक है हृदय में धारण सूं ताप कूं मिटायवे वारो होय है रमण शय्या में परमोपयोगी होय है और नित्य नवीन है अथवा ध्वजा वज्र अंकुश कमल है शोभायमान जामें ऐसे चरण में है पल्लव जिनके, ऐसे श्रीजी हैं । सो तो जब स्वामिनीजी विरह ताप सूं अपने हृदय में पल्लवन कूं स्थापित करती भई वाही समय में ही श्रीजी पधारे तब विह्वल होयवे सूं शीघ्र ही ताप मिटायवे कूं श्रीजी के चरणन कूं पल्लवन के सहित जो हृदय वापर धारण करत भई तब सो ताप मिट गयो तासूं ताकूं स्मरण कर अब भी तैसे करो यह अभिप्राय सूं कह्यो । **ध्वजवज्रांकुशांभोजराजच्चरण पल्लवः** । ऐसे एक एक

अंग वर्णन सूं भी ताप के मिटवे सौं अत्यंत दुःखित भईं । एक बेर संग सूं जो ऐसो दुःख देवे वाकूं काहे कूं फेर ढूंढ़नो । ऐसी शंका कूं दूर करत ही स्वरूप में अत्यंत अभिनिवेश होयवे सूं समुदित स्वरूप कूं वर्णन करें हैं ।

६७ -- **त्रैलोक्याद्भुत सौंदर्य परिपाक मनोहरः**:-- त्रिलोकी से भी अद्भुत कहिये कहूं न होयवे वारो सौंदर्य सो गोपीजन को तिनको जो परिपाक है विरह ताप सूं अधर आदि को सुख तो तामें भी जो मन को हरवे वारे ही हैं ऐसे श्रीजी हैं सो तो श्रीजी तो सदैव सुखदायक ही हैं श्रीजी के दर्शन आदि के न होयवे सूं स्वतः ही केवल दुःख होय है वामें श्रीजी तो कारण नहीं हैं विरह सूं अत्यन्त क्लेश मन के निवर्त्त करने की इच्छा होने पर भी मन तो श्रीजी ने हर लियो है सो धर्मी है मन सो तो अपने पास है नहीं निवर्त्त को न होय सो यह श्रीजी विषय ऐसो है जा वस्तु कूं हरें हैं वाकूं फेर नहीं देवें हैं अनेक वार निवर्त्त करो पर कहां से होवे तैसे गीत गोविन्द में भी कह्यो है ॥

गणयति गुणग्रामं भ्रमादपि नेहते ।
तहति च परितोषं दोषं विमुच्चति दूरतः ॥
युवतिषु चलत्तृष्णे कृष्णे विहारिणि मां विना
पुनरपि मनो वामं कामं करोति करोमि किम् ॥[1]

श्री स्वामिनीजी सखी के प्रति कहें हैं श्रीजी और नायकान में विहार करें हैं इनको चित्त स्थिर नहीं है

---

[1] जयदेव गीतगोविन्दम् पृष्ठ २६ द्वितीय सर्ग श्लोक सं. १ ।

KRISH BAXI

ठिकाने ठिकाने जाय है फिर भी मेरो मन याकूं चाहे हैं, सखी मैं कहा करूं विनके ही गुणन कूं विचारूं हूं भ्रम सूं भी विस्मरण नहीं करूं हूं विनकी वार्त्ता सूं ही प्रसन्न होवुं हूं विनके दोषन कूं दूर सूं ही त्याग करूं हूं तासूं मन महा क्रूर है पराधीन है अब कहा करूं ऐसे और भी कहें हैं --

रिपुरिव सखी संवासोऽयं शिखीवा हिमनिलो
विषमिव सुधारश्मिर्यस्मिन दुनोति मनोगते ॥
हृदयमदये तस्मिन्नेवं पुनर्बलते बलात् ।
कुवलयदृशां वामः कामो निकामनिरंकुशः ॥[१]

यह सखीन के सहित निवास शत्रु जैसे मेरे मन कूं दुःखी करे है वह प्रिय है सो अत्यन्त निर्दयी है पर मेरो हृदय हठ सूं ही वामें जावे है नायकान कूं यह काम निरन्तर स्वेच्छाचारी दुःखदायक है ऐसे गीत गोविन्द में कह्यो है ॥ अथवा त्रिलोकी को जहां कहां ही जो अद्भुत सौंदर्य है तिनको भी परिपाक कहिये सारता रूप जो विग्रह स्वरूप तासूं मन के हरवे वारो है अथवा त्रिलोकी में अद्भुत सौंदर्य जिनको ऐसी जे गोपीजन विनके परिपाक में कहा के फल प्राप्ति समय में मन कूं है हरण जिससूं ऐसे श्रीजी हैं, मन कूं जो हरण है सोई ही फल रूप है तासूं कह्यो है --

अथवा ब्रजभक्तन को जो त्रैलोक्याअद्भुत जो सौंदर्य तिनके परिपाक में कहा के भली प्रकार सिद्ध होने में मन कूं हरण करें हैं ऐसे श्रीजी हैं । यह तो

प्रातःकाल सूं लेकर संध्या पर्यंत पुष्प शय्या, माला की रचना, अभ्यंग करनो स्नान करनो अनेक प्रकार के वस्त्र नीवी पहिरनो केशन को प्रसाधन सुगंधी तेल आदि कूं लगावनो तिलक लगावनो नयन में काजर भरनो इत्यादिकन सूं सकल श्री अंगन में परम सौंदर्य के सिद्ध होने में संध्या समय में श्रीजी पधारके तिनके मनकूं हरण करें हैं वाकूं स्मरण, बिना दिये पराई वस्तु को बल सूं ले लेनो वाको नाम हरण है सो ब्रजभक्त तो श्रीजी के मन हरवे कूं सब प्रकार सूं सिद्ध होवे हैं पर जब श्रीजी पधारें हैं तब बिन सबन के मन कूं हर लेवें हैं तासूं जहां बिना दिये भी मन कूं ग्रहण करें हैं जहां अब दिये भये हमारे मन कूं ग्रहण करें यामें कौन आश्चर्य है यह भाव सूचना कियो । ऐसे संध्या काल में पधारे श्रीजी के स्वरूप कूं कहेंकर वाके पीछे क्रम सूं एकांत में पधारे जे श्रीजी विनके स्वरूप कूं वर्णन करें हैं--

६८ -- **साक्षात्केलि कलामूर्त्तिः**-- केलि कामकेलि सो यही कला तिनकी मूर्ति है । चतुषष्टी कला के मध्य में और जे कला हैं विनके तो जानवे वारे हैं और काम केलिकला के तो मूर्त्ति रूप ही हैं जैसे दुर्गा आदि की मूर्ति कहे हैं तैसे ही कामकेलि में जे धर्म है वे धर्म भगवान में ही होयगे तासूं भगवान कूं भी कामकेलि रूप कह्यो, वास्तविक तो नहीं, ऐसी कोई आशंका करे ताके मिटायवे कूं साक्षात् पद कह्यो सो जैसे दिव्य दुर्गा शरीर में ही मूर्त्ति व्यवहार है हमारो ही यह भाव

---

[१] जयदेव गीतगोविन्दम् सप्तम सर्ग श्लोक सं. २ ।

GIRISH BAXI

है और साक्षात् रसात्मक श्रीजी में ही काम केलिकला मूर्त्ति व्यवहार हमारो ही है यह भाव है । और साक्षात् केलिकला कहवे सूं सुरत में रमण में विचित्रता सूचना करी । श्रीजी के एक एक अंग में दर्शन मात्र सूं सुरत की इच्छा प्रकट करी और श्रीजी सुरत में अनेक प्रकार के बंधन में कुशल है तासूं साक्षात् कामकेलिकला को स्वरूप ही है अथवा साक्षात् पद को अर्थ प्रत्यक्ष है तासूं प्रत्यक्ष ही केलिकला में ही है स्वरूप जिनको दर्शन मात्र सूं ही सुरत भाव सूं ही ज्ञान होय है नतु प्रथम कहे समय में ही रसिक शिरोमणि भावादि ज्ञान भी होय है यह भाव है अथवा साक्षात् केलिकला के निमित्त है स्वरूप जिनको ऐसे श्रीजी हैं ऐसे रति समय में जो प्रभु को स्वरूप ताकूं वर्णन करके वा समय में ही वा रस के पुष्ट करने वाले और रसन सूं भी मिले ये कहे हैं --

६९ -- **परिहास रसार्णवः** -- परिहास जे हास्य रस के प्रकट करवे वारे वचन विनमें जो रस है तद् रूप ही समुद्र है अथवा हास्य रस के प्रकट करवे वारे जे वचन विनमें जो रस तिनके समुद्र रूप हैं श्रीजी, हास्य वचन कहें हैं तब एक ही वचन को जो रस है तामें ब्रज भक्त मगन जब होंय तब श्रीजी दूसरो वचन तैसो ही कहें हैं तब प्रथम रसके पार कूं न देखत ब्रजभक्त प्रथम सूं भी समुद्र के एक तरंग सूं दूसरे तरंग में जैसे अधिकता होय है तैसे दूसरे अधिक हास रस तरंग में मग्न होय जाय हैं, ऐसे उत्तरोत्तर अधिक हास्य रस

कूं प्रकट करें हैं तासूं रस की ही मुख्यता है । वचन की नहीं है यासूं ही रस पद दियो है वचन बहुत होय रस वारो होय तो वा वचन में रस नहीं आवे है तासूं ही श्रीजी नयन भ्रौं आदि सूं भी हास्य रस कूं प्रकट करें हैं और भी रसिक सिद्धांत में कहें हैं रस तो केवल श्रृंगार ही है और जे वीर आदि कहे वे तो वा श्रृंगार के पुष्टि करवे सूं ही रस कहे जाय हैं नहीं तो वे रस नहीं हैं जैसे बड़े राजा के संपूर्ण साधन सूं सुवर्णमय होवे है और जे रूप आदि हैं वे सुवर्ण सूं तुच्छ हैं तासूं ताकूं तो धातु भाव नहीं मानें हैं तैसे श्रृंगार ही केवल रस है और तो वाके अंग ही हैं, नहीं तो या श्रृंगार रस में और रसन कूं रसाभास करनो होय तब तो महा हानि । तासूं और वीरादि जे हैं वे तो श्रृंगार रस के पुष्ट करवे वारे हैं तासूं ही रमण में विशेषकर मर्द्दन करण के अभिप्राय सूं ही **केशिमथनमुदारं** इहां और **मधुसूदन मुदित मनोजं** यहां केशिमथन पद सूं और मधुसूदन पद सूं रति में विशेष मर्द्दन की सूचना करी इत्यादि नामन सूं जयदेव ने भी गीतगोविन्द में तैसे निरूपण कियो है नहीं तो श्रृंगार में वीर रस कूं प्रकट करवे वारे नाम कूं काहे कूं प्रयोग करत, तासूं ही श्रृंगार में यहां भी रति रमण कह्यो है । अथवा ब्रजभक्तन ने कियो जो हास्य रस सो है समुद्र जिनकूं ऐसे श्रीजी हैं । जब श्रीजी और ब्रजभक्त आपस में हास्य वचन कहें हैं तब हांसी में भी श्रीजी विनकूं नहीं जीत सकें हैं रस की रीति ही ऐसी है यामें दोष नहीं । अपनी